RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20/प्रकाशन तिथि 28 मार्च 2018

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका अप्रैल 2018

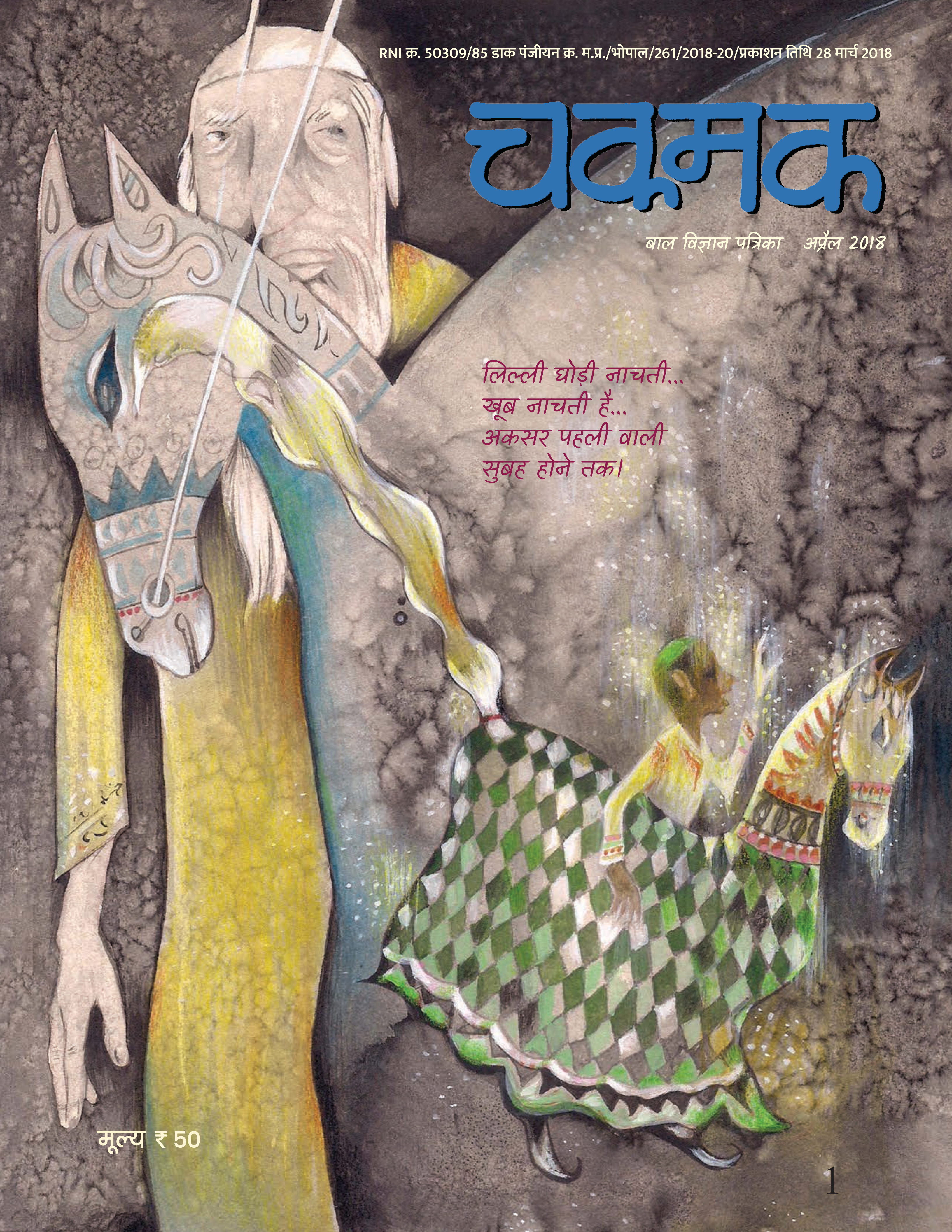

मूल्य ₹ 50

न्यू यॉर्क

एक औरत – एक औरत का बुत,
एक हाथ में उठाए हुए चीथड़े जिनका नाम है स्वतंत्रता
कागज़ के पन्ने जिन्हें हम इतिहास का नाम देते हैं,
और दूसरे हाथ से दम घोंटती हुई
एक बच्ची का, जो हमारी धरती है

– अरब के कवि अदोनिस की
कविता 'न्यूयार्क के लिए एक क़ब्र' का अंश

मूर्तिकार: तम्माम अज़म

स्टेच्यु ऑफ लिबर्टी

सीरिया में सालों से चल रही लड़ाई ने पिछले साल बहुत ही भयावह रूप ले लिया। यह लड़ाई अभी तक जारी है। इसी युद्ध के विरोध में अपने घर के टूटे हुए मलबों से सीरियाई कलाकार तम्माम अज़म द्वारा बनाया हुआ स्टेच्यु ऑफ लिबर्टी।

अंक 379 अप्रैल 2018

चकमक

चित्र: शुभम लखेरा

चींटी और हाथी स्कूटर पर जा रहे थे।
स्कूटर का एक्सिडेंट हो गया।
हाथी मर गया पर चींटी बच गई।

कैसे ?

क्यूँकि, चींटी ने हेलमेट पहना था।

इस बार

स्टेच्यु ऑफ लिबर्टी - तम्माम अज़म	2
नाचघर - प्रियम्वद	4
रतजगा, बुखार, नींद... - दवंगरा	8
विद्रोह की छप छप - रिनचिन	11
बौरा गए हैं आम - किशोर पंवार	14
साइकिल पथ - चित्रा विश्वनाथन	15
एडोल्फ बनाम रुडोल्फ - विंध्या किल्लरू	17
बेताबियों के अड्डे - अलीशा	20
अद्भुत ततैये - नेचर कंज़र्वेशन फाउंडेशन	22
गणित है मज़ेदार	25
तराशा दिन और... - विनोद कुमार शुक्ल	27
मेरा पन्ना	32
माथापच्ची	39
एक सूखे पेड़ की दुनिया - दीपाली शुक्ला	40
चित्र पहेली	43
मच्छर और हाथी - सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	44

आवरण चित्र: प्रशान्त सोनी

विशेष सहयोग - इकतारा बाल साहित्य केन्द्र

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

डिज़ाइन
कनक शशि

सम्पादकीय सहयोग
सी एन सुब्रह्मण्यम्
कविता तिवारी
सजिता नायर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव
ब्रजेश सिंह

एक प्रति : 50.00
वार्षिक : 500.00
तीन साल : 1350.00
आजीवन : 6000.00
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण-
बैंक का नाम व पता - **स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल**
खाता नम्बर - **10107770248**
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017 फैक्स: (0755) 2551108 email - chakmak@eklavya.in, email - circulation@eklavya.in, www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

विदा!

प्रियम्वद

चित्र: प्रशान्त सोनी

बाइस साल बीत चुके हैं।

वैद्यजी की मृत्यु हो गई है। सगीर बहुत रोया था। उसने आखिर तक वैद्यजी की अर्थी को कँधा दिया था। वैद्यजी की इच्छा अनुसार चिता पर उनके साथ रावण का दस सिर वाला मुकुट भी रखा गया था।

सगीर अब बूढ़ा हो गया है। उसके घुटनों में दर्द रहता है इसलिए लिल्ली घोड़ी के साथ अब नाच नहीं पाता। एक दिन लिल्ली घोड़ी रोई तो सगीर ने उसे नाचघर में दे दिया। अब वह नाचघर के हॉल की दीवार में टँगी रहती है। अकसर उसे बाँधकर मोहसिन बच्चों को नाच दिखाता है। दरगाह पर चादर बेचने के साथ सगीर अब जनाज़े के लिए गैस बत्ती भी मुफ्त देता है।

लाजवन्ती की माँ अब सोनख्वाब गाँव में ही रहती हैं। लाजवन्ती के पिता ने मर्चेन्ट नेवी की नौकरी छोड़ दी है। वह भी गाँव में रहते हैं। वहाँ अपने घर में रंग बनाते हैं। लाजवन्ती की माँ बच्चों को दिन में पढ़ाती हैं। शाम को कहानियाँ सुनाती हैं। साल में एक बार लाजवन्ती और मोहसिन के साथ रहने आती हैं। साल में एक बार वो दोनों सोनख्वाब उनके पास जाते हैं।

मोहसिन की अम्मी अपने पुराने घर में रहती हैं। उन्होंने पुराना घर छोड़ने से इंकार कर दिया। अभी भी दरगाह पर चढ़ाने के लिए चादरें बनाती हैं। उन पर मन्नत पूरी होने की दुआ काढ़ती हैं। अभी भी अल्लाह उनकी दुआएँ ज़रूर कुबूल करता है। सगीर आज भी दुकान पर उनकी बनाई चादरें बेचता है। उनकी आँखों से अब कम दिखता है इसलिए चादरें अब कम बनाती हैं। मोहसिन रोज़ एक बार उनसे मिलने ज़रूर आता है।

पादरी हेबर भी अब बूढ़े हैं। चर्च से अलग रहते हैं। उनके पास अपने पुरखों और अवध के नवाबों के बहुत-से किस्से हैं। लन्दन और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के भी। नाचघर में अकसर बच्चों को इनकी कहानियाँ सुनाते हैं। नाचघर का हिसाब-किताब देखते हैं। सरकारी दफ्तरों में उसके कामकाज को देखते हैं।

काला बच्चा ने मुर्गा मण्डी और बर्फखाना खरीदकर मॉल बनवा लिया है। उसकी निगाहें अब शहर की बची-खुची पुरानी इमारतों पर हैं। इनमें विक्टोरिया मिल, पुराना बस अड्डा, पावर हाउस और मैकरॉबर्ट अस्पताल है। शहर का आसमान निगलने की उसकी भूख और रफ्तार दोनों बढ़ गए हैं। आसमान के साथ वह धूप... चिड़िया... हरे पेड़... ताज़ी हवा भी निगल रहा है। अब उसका पेट अन्न से नहीं इनसे भरता है।

नुजूमी की ज़ेबरे की खालें चोरी हो गई। तब से उसने भविष्य बताना छोड़ दिया है। अब नीचे गल्ले की दुकान पर तराजू से अनाज तौलता है। छुट्टी के दिन ठेले पर अनाज रखकर सँकरी गलियों में आवाज़ लगाकर बेचता है। कभी-कभी काला बच्चा को गालियाँ देता है जिसने दमपुख्त में लाल मिर्च झौंककर उसकी आँतें हमेशा के लिए खराब कर दीं।

तीतरवाले के तीतर को जब से कुत्ता खा गया उसने तीतर लड़ाना छोड़ दिया है। अब वह ढीले खटोले पर बैठकर पुराने दिनों की जुगाली करता है। अपने तीतरों की मोहब्बत और वफादारी की याद करके रोता है। इन तीतरों की कब्र पर हर साल फूल चढ़ाता है। कव्वाली का मुकाबला करवाता है। खुद जज बनता है। ईनाम में तीतरों की खुराक बोरों में देता है।

शहर अब 'नसीम जागो कमर को बाँधो, उठाओ बिस्तर कि रात कम है' की आवाज़ से नहीं जागता। एक दिन फार्म हाउस में सूर्पनखा मरी मिली। काली बिल्ली उसके पास बैठी थी। सूर्पनखा को दफन करना है या जलाना यह कोई नहीं जानता था। उसकी बिल्ली भी नहीं जानती थी। बहुत सोचने के बाद फार्म हाउस के लोगों ने नदी किनारे उसे जलाकर उसकी अस्थियाँ दफन कर दीं।

बाईस सालों में गंगा नदी में पानी बहुत कम हो गया। अब वह नाला दिखती है। शहर की सारी गन्दगी इसमें गिरती है। चमड़े की टेनरियों का ज़हरीला केमिकल वाला पानी इसमें गिरता है। जलाए गए मुर्दों की सारी गन्दगी इसकी धार में जमा होती है। नदी में अब नावें नहीं चलतीं। मल्लाह नहीं गाते। कोई नदी से नहीं पूछता तुम्हारा घर कहाँ है? क्या तुम कभी अपने घर नहीं लौटतीं?

लाजवन्ती और मोहसिन ने शादी कर ली है। नाचघर की सीढ़ियों से ऊपर जानेवाले लाजवन्ती के घर में दोनों रहते हैं। उनकी एक प्यारी बच्ची है। उसका नाम उन्होंने मेडलीन रखा है। नाचघर जब उनको मिला, उनके बड़े होने तक पादरी हेबर ने उसकी देखभाल की। हीरों को बेचकर पूरे नाचघर की साफ-सफाई, मरम्मत करवाई। उसका पुराना वैभव लौट आया पर अन्दर उसकी बनावट में कुछ नहीं बदला। अब लाजवन्ती और मोहसिन नाचघर

देखते हैं। उन्होंने इसे सिर्फ बच्चों के लिए बनाया है। बच्चों की किताबें हैं। बच्चों के कार्यक्रम होते हैं। बच्चों को गीत-कहानियाँ सुनाई जाती हैं। फिल्में दिखाई जाती हैं। सबसे बड़ी बात, नाचघर के बारे में सारे फैसले बच्चे मिलकर लेते हैं। इसमें कोई बड़ा व्यक्ति नहीं है। बड़ों का कोई दखल नहीं है। लाजवन्ती और मोहसिन का भी नहीं। वे सिर्फ वही करते हैं जो बच्चे तय कर लेते हैं। उन दोनों ने हर शहर, हर कस्बे में एक ऐसा नाचघर खोलना तय किया है। वे इसे पूरा करने में लगे हैं। दो शहर और तीन कस्बों में वे नाचघर खोल चुके हैं। हर शाम नाचघर बच्चों के लिए खुला रहता है। वे लड़ते हैं, चीखते हैं, हँसते हैं, गलतियाँ करते हैं, मन के पंखों से उड़ते हैं क्योंकि नाचघर उनका है।

कभी-कभी मोहसिन पियानो बजाता है। लाजवन्ती उसकी धुन पर नाचती है। नन्ही मेडलीन तालियाँ बजाकर हँसती है। हैरान-सी माँ के उड़ते केशों को देखती है।

नाचघर वैसा ही है। कोतवाली की घड़ी, बन्द लाल इमली मिल की ठण्डी चिमनी, खेतों से लौटते तोते, नीला आसमान, सर्दियों की धूप, कोहरा, यतीमखाने के हरी काईवाले गुम्बद... बरगद की जटाओं में फँसा चाँद, मज़ार पर बँधे मन्नत के डोरे, चादरों पर कढ़ी प्रार्थनाएँ, हवाओं में दौड़ते सूखे पत्ते, मसालों की गन्ध, आवाज़, फड़फड़ाहट, शंख की ध्वनि, सबके साथ नाचघर उसी तरह रह रहा है। वह भी बूढ़ा हो गया है। कभी-कभी रात के अकेलेपन और सन्नाटे से घबराकर नाचघर खूँटी पर टँगी लिल्ली घोड़ी को आवाज़ देकर जगाता है। लिल्ली घोड़ी खूँटी से उतर आती है। नाचघर तालियाँ बजाता है। लिल्ली घोड़ी नाचती... खूब नाचती है... अकसर पहली वाली सुबह होने तक।

खुदाहाफिज़ नाचघर...

लाजवन्ती और मोहसिन करीब दो साल पहले चकमक के पन्नों पर आए। तब से अब तक वे हमारे हमसफर बनकर रहे। नाचघर में उनका मिलना, वहाँ नाचना, उसकी बिक्री के बारे में चिन्ता करना और उनके ज़रिए मेडेलिन और उस पियानोवादक के प्यार की कहानियाँ... ऐसा लगता रहा कि ये सब हमारे सामने हमारे बीच घटित हो रहा है। हम उनके साथ मन्नत की चादर चढ़ाने गए और दुआएँ माँगीं कि नाचघर बिके नहीं और वह एक बदसूरत बहुमंज़िला इमारत न बन जाए। हमें उनके बीच खिलती मोहब्बत से खुशी हुई और जब नाचघर बिकने से बचा और वह शहर के बच्चों का अड्डा बना तब हमें बहुत तसल्ली हुई। अब यह उपन्यास समाप्त हो रहा है तो भारी मन से हम इन दोनों को और नाचघर को भी अलविदा कह रहे हैं।

उपन्यासकार प्रियम्वद ने लाजवन्ती, मोहसिन और नाचघर को मानो हमारे दिल के करीब, अपने चिर-परिचितों में शामिल करवा दिया। हर अंक का हम इन्तज़ार करते रहे कि अब उनके साथ क्या होगा। हाँ, इसमें एक बड़ा हाथ चित्रकार प्रशान्त सोनी का भी रहा है। उन्होंने न केवल इन पात्रों को रंग और रूप दिया, बल्कि उस पूरे माहौल को भी हमारे सामने जीवन्त बनाया, जिसमें वे पल-बढ़ रहे थे।

हाँ, अलविदा कहते-कहते हमें इस बात की खुशी है कि नाचघर अब किताब के रूप में उपलब्ध है – तक्षशिला ने इसे प्रकाशित किया है। तक्षशिला सृजनपीठ के तहत ही प्रियम्वद ने इस उपन्यास को लिखा था।

नाचघर

लेखकः प्रियम्वद,

चित्रकार: अतनु राय

मूल्य: रुपए 225/-

प्रकाशक: जुगनू प्रकाशन,

तक्षशिला की प्रकाशन छाप,

नई दिल्ली

ISBN: 978-93- 84375-23- 2

रतजगा, बुखार, नींद, सपने और......... परीक्षा!

दवंगरा

दसवीं की परीक्षाएँ....... ये वो दिन होते हैं जब हम हर तरह की भावनाओं से गुज़र रहे होते हैं। हमें हर वो काम याद आता है जो हमने पूरे साल नहीं किया होता। हर चीज़, हर गाना जो सुनना है या फिर हर वो फिल्म जिसे देखना है, सब हमें परीक्षाओं के दिनों में याद आते हैं। इन दिनों हम कई तरह की मानसिक स्थितियों से गुज़रते हैं। मगर सबका अपना-अपना तरीका होता है।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनके लिए परीक्षा कोई बड़ी बात नहीं होती। पर मेरे लिए परीक्षाएँ कभी-भी अच्छी नहीं रहीं। साल के उस वक्त जब मौसम इतना अच्छा होता है तब घर में बैठकर दिन-रात पढ़ना पड़ता है। जहाँ वसन्त के सुगन्धित मौसम से गर्मियों का आगाज़ होता है, वहीं रात-रात जागना शुरू हो जाता है। कोई सुबह जल्दी उठकर पढ़ता है। किसी-किसी के घर परीक्षा के दिन खास पूजा-पाठ किया जाता है।

कुछ दिन पहले ही दीपांशी से मेरी बात हुई थी जो दसवीं की परीक्षा देकर निकली थी। उसका गणित का पेपर था। उसने कहा, "जब तक आप मन लगाकर या मन से पढ़ रहे हों आपको सब समझ आता रहता है। सिर्फ तब तक आप पढ़ाई कर रहे होते हैं। ऐसे तो मेरे दोस्त पूरा-पूरा दिन पढ़ते रहते हैं लेकिन उनका मन नहीं होता है।" दीपांशी बताती है कि वह ज़्यादा नहीं पढ़ती। कोचिंग सेंटर जाती है। फिर घर आकर दो घण्टे और पढ़ती है। फिर सो जाती है। वह अपने आप पर परीक्षा का बोझ नहीं डालती। उसका कहना है कि जब मन हो तभी पढ़ना चाहिए। पर अगर मन ही ना लगे तो? असली सवाल तो यही है।

परीक्षा हॉल से निकलकर सभी छात्र-छात्राएँ अपने दोस्तों के चेहरे पढ़ रहे होते हैं। बहुत ही डर के साथ एक-दूसरे से पूछते हैं कि पेपर कैसा रहा। कुछ अपना असली हाल सुना देते हैं और कुछ कहानियाँ बनाने लगते हैं। कुछ नम्बर गिनकर रखते हैं कि इतने तो आ ही जाएँगे। मानो परीक्षक वे खुद ही हों और अपना पेपर खुद जाँच रहे हों।

दसवीं का पूरा साल एक अलग ही माहौल में गुज़रता है। मार्च या अप्रैल में

आकर इसका अन्त होता है। साल भर जिससे भी मिलो हर कोई यही सवाल करता है कि 'कौन-सी कक्षा में हो? अच्छा, दसवीं में हो, तब तो अच्छे-से पढ़ाई करना। गणित और विज्ञान के विषय ध्यान से पढ़ना।' पर ध्यान लगाएँ कैसे?

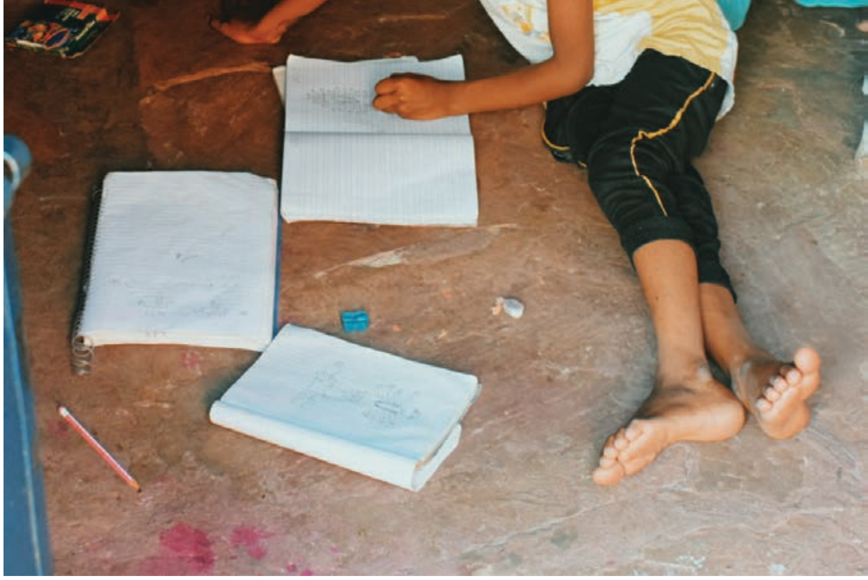

12 नम्बर मार्केट के पास वाली 'मल्टियों' में रहने वाले गिरीश नीलकण्ठ ने बताया कि तीन महीने पहले कोचिंग सेंटर में जाना शुरू किया। पर जो कोचिंग में पढ़ाया जाता था वो कोचिंग से बाहर आते ही पता नहीं कहाँ गुम हो जाता। उससे पूछा कि आज गणित का पेपर कैसा रहा? तब उसने खूब आत्मविश्वास से कहा कि सप्लीमेंटरी आएगी। सवाल सब समझ आ रहे थे पर करना नहीं आ रहा था।

गणित के पेपर के बाद सरोजिनी नायडू स्कूल के बाहर किसी के चेहरे पर पेपर अच्छा होने की मुस्कान थी तो किसी के चेहरे पर उदासी। वहीं कुछ ऐसे भी थे जो इस बात से बेहद खुश थे कि अब गणित से पीछा छूटा। उनमें से एक, तंजिला का कहना था कि उसने गणित के लिए खास तैयारी की थी। पर वो उनको करने का तरीका भूल गई। अकसर ऐसा होता है कि पेपर देखकर सब भूल जाते हैं। तंजिला कहती है कि गणित मुझे कभी नहीं आती। कोई कितना ही सिखा दे।

वहीं कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिनके लिए रोज़ के दिनों में और परीक्षा के दिनों में कोई फर्क ही नही होता। उनके लिए बस परीक्षा के पहले का दिन पढ़ाई का दिन होता है। यह बात है 12 नम्बर बाज़ार के पास मल्टियों में रहने वाले दीपेन्द्र की। उसका कहना है कि पूरे साल कक्षा में अच्छे से अध्यापक को सुना जाए और थोड़ी बहुत घर पर पढ़ाई की जाए और फिर परीक्षा के एक दिन पहले डटकर पढ़ लिया जाए तो उनके बहुत अच्छे पेपर हो जाते हैं।

परीक्षा देकर यूनिफार्म में ही सोया जाता है कई दिन। शायद सबको अपने खेलने के दिन शुरू होने का इन्तजार होता है। और कुछ गणित जैसे विषय से छुटकारा पाने की खुशी मना रहे होते हैं। सोते या जागते ये दिन हैं सपने देखने के।

दसवीं की परीक्षाएँ कई लोगों के लिए अपने सपनों को साकार करने का पायदान होती हैं। शिवन्या और शिवानी परीक्षा देकर स्कूल के बाहर बैठी थीं। शिवन्या के घर में कोई कमाने वाला नहीं है, तो वह पैसा कमाने के लिए काम भी करती है और अभी दसवीं की परीक्षा भी दे रही है। पढ़ना और काम करना उसके लिए बहुत मुश्किल हो जाता है, पर सपने देखने में वह कोई कमी नहीं रखती।

उन दोनों को कॉलेज जाने का बेसब्री से इन्तज़ार है। तब वे अपने दोस्तों के साथ घूम-फिर सकती हैं। एक तरफ वह पुलिस में नौकरी करने के सपने देख रहीं हैं वहीं दूसरी तरफ मॉडलिंग करने के भी सपने बुन रही हैं।

कैलाश नगर की बस्ती में रहने वाले किरण और सचिन काम्बले दोनों एक ही परिवार के हैं। इनके भाई-बहन पढ़ाई में इनकी मदद करते हैं। घर पर पढ़ाई करने का सबका अपना-अपना कोना है। इन सुन्दर-से छोटे कोनों में, उस विषय की एक किताब पड़ी होगी जिस की अगली परीक्षा है।

दसवीं के छात्रों के लिए एक चुनौती होती है परीक्षा के दिनों में बुखार चढ़ जाना। अगर बुखार आ गया तब तो मानो आप गए काम से। मुझे अकसर बचपन में परीक्षा का नाम लेते ही बुखार चढ़ जाता था। मैं शंकर नगर में रहने वाली एकता से मिली जो परीक्षा देकर घर आई ही थी और अपनी पलंग पर सो रही थी क्योंकि बुखार से उसका सर फट रहा था। एकता को आधा बुखार तो चिन्ता की ही वजह से आया था।

बुखार का सपनों पर क्या असर होता होगा? शायद हम सपने देखना कभी नहीं छोड़ सकते। वो परीक्षा में बस बहुत तेज़ी-से देखे जाते हैं। जब परीक्षा के दिन खतम हो जाते हैं, हम आगे और परीक्षाओं की तैयारियाँ करते हैं फिर और, फिर और। फिर शायद एक ऐसा बिन्दु आता है जब परीक्षा से छुटकारा मिलता है और हम बेफिक्र होकर नाचते हैं। शायद ये एक और सपना है।

भोपाल में दसवीं के परीक्षा देने वाले बच्चों से बातचीत के आधार पर दवंगरा की रिपोर्ट।

फोटोग्राफ: दवंगरा

विद्रोह की छप-छप

रिनचिन

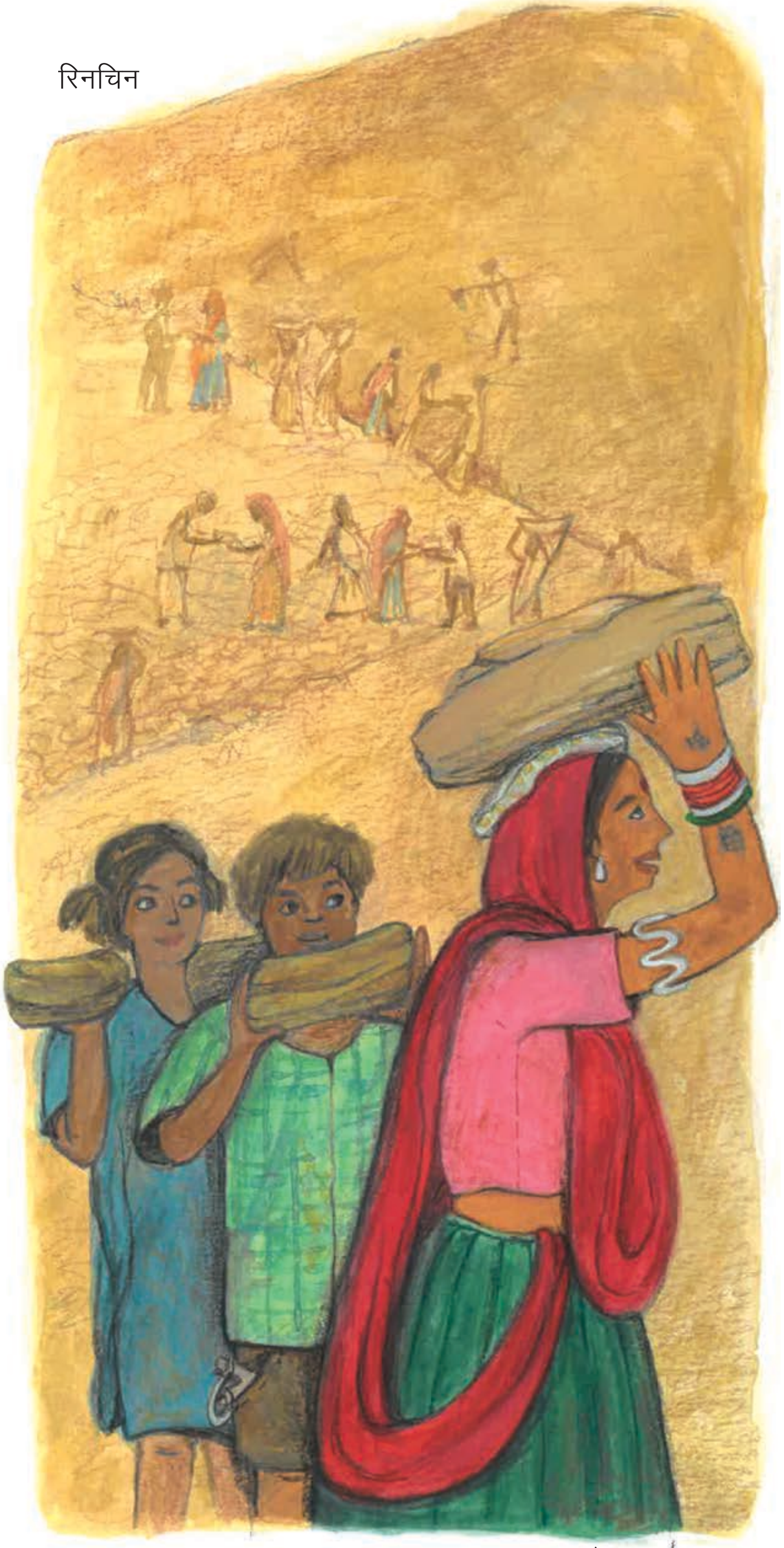

जीप से उतरकर सामने देखा तो एक पहाड़ी थी। पहाड़ी के ऊपर एक मकान बना हुआ था और लाल झण्डा लहरा रहा था। यहीं तो मुझे पहुँचना था। दूर से देखने पर लगता था कि सूखे मौसम में भी झाड़ियों पर रंग-बिरंगे फूलों की बहार आई हुई थी। जीप तो मुझे उतारकर आगे बढ़ गई। वैसे उसमें इतने लोग ठसा-ठस भरे हुए थे कि मेरे उतरने से शायद ही कोई फर्क पड़ा होगा। मैंने मन ही मन जीप और उस में बैठी सवारियों की सुरक्षा की दुआ की। मैंने एक पहाड़ी पार की और दूसरी पहाड़ी के नीचे खड़े-खड़े ऊपर बने स्कूल को देखा। सूरज डूबने ही वाला था और जब तक मैं ऊपर पहुँची शाम हो चुकी थी। छोटे-छोटे बच्चे दौड़-भागकर अपना-अपना रोज़मर्रा का काम निपटा रहे थे। वहाँ पहुँचकर समझ में आया कि जो मैंने सोचा था कि झाड़ियों पर फूल लगे हैं, वे फूल नहीं थे, बच्चों की चड्डियाँ सूख रही थीं। मैं खुलकर हँस पड़ी। जब मैं बच्चों के करीब पहुँची तो समवेत स्वर में मेरा स्वागत हुआ - ज़िन्दाबाद बाई। मैं निर्माण शाला में थी।

मैं यहाँ दो-एक महीने रहकर बच्चों को पढ़ाई में मदद करने वाली थी। जल्दी ही मेरी बच्चों से दोस्ती हो गई। वे मेरे गैर-शिक्षकनुमा तौर-तरीकों से काफी खुश थे। उन्हें यह भी अच्छा लगता था कि मैं उन्हें सहज रहने देती थी और उनके अध्यापकों के खिलाफ उनका पक्ष लेती थी। अध्यापक लोग भी मेरी शिक्षा को देखते हुए मेरा लिहाज़ करते थे। मैं और बच्चे दोस्त तो बन ही गए थे।

एक दिन दोपहर में कक्षा पूरी होने के बाद हम फुरसत में थे। मैं पेड़ के नीचे बैठकर अपने कुर्ते के बटन टाँक रही थी। "तुम्हें तैरना आता है?" मैंने आँखें उठाकर सवाल पूछने वाले की ओर देखा और कहा, "हाँ।" "तो हमारे साथ चलो, हम सब डाबरी में तैरने जा रहे हैं।" स्थानीय अध्यापक ने उन्हें रोकने की कोशिश की मगर मेरी मदद से उन्होंने उसकी बात काट दी और हम सब तालाब की ओर चल दिए। तालाब मानव-निर्मित था। उन्होंने एक जंगली नाले के एक तरफ बाँध बनाकर पानी को रोक लिया था। पानी भरने के लिए यह तरीका इस इलाके में काफी आम है।

तैरना तो मुझे लगभग उतना ही आता था जितना बच्चों को आता था। तो मैं खुशी-खुशी बच्चों के साथ तालाब में उतर गई। थोड़ी देर तक हम सबने पानी में खूब छप-छप की। मैं जल्दी ही थक गई और बाहर निकलकर पेड़ की छाया में सुस्ताने लगी। वहाँ से मुझे बच्चों की किलकारियाँ सुनाई पड़ रही थीं जो तेज़ से तेज़ होती जा रही थीं और पानी छपछपाने की आवाज़ भी बढ़ती जा रही थी। मैं सोच रही थी कि क्या मुझे उन्हें रोकना चाहिए, तभी एक किसान बाँध के पीछे से आ धमका। वह बच्चों पर चिल्ला रहा था और अपनी लाठी लहराकर उन्हें धमका रहा था। बच्चे चुप हो गए। किसान उन्हें पानी गन्दा करने के लिए डाँट रहा था। यह पानी ढोरों के पीने के लिए और खेतों के लिए है। वे इसमें बन्दरों की तरह उछल-कूद क्यों कर रहे हैं? बच्चे थोड़े रोष से पानी से बाहर आ गए, मगर चुप रहे। अलबत्ता, दबी आवाज़ों में थोड़ी फुसफुसाहट हो रही थी। किसान उन सबके बाहर निकलने तक रुका रहा, कुछ और गालियाँ दीं और धमकाया और फिर पलटकर अपने खेत की ओर चल दिया। बच्चे उसे जाते देखते रहे। दबी आवाज़ में 'ये डाबरी कुणिंची? आमरी छे, आमरी छे!' नारा उभरा मगर ज़्यादा चला नहीं।

मैं पूरा घटनाक्रम पीछे से देख रही थी, और समझ नहीं पा रही थी कि क्या कहूँ। मैं वयस्क थी जिससे उम्मीद की जाती है कि वह ज़िम्मेदारी से काम करेगी और मैं थी कि पानी छपछपा रही थी। मैंने चुपचाप अपने कपड़े उठाए और वहाँ से खिसक ली। जानती थी कि बच्चे पीछे-पीछे आएँगे। बाद में जब क्लास में हमारी मुलाकात हुई तो सामने गुस्से से भरे चिड़चिड़े चेहरे थे। उन्होंने चुपचाप गणित के सवाल किए और मुझसे आँखें चुराते रहे। शाम को काफी फुसफुस चलती रही और अलग-अलग मीटिंगें भी होती रहीं। मैंने देखा कि भूरी, इंकार और इन्दील सिंह आपस में बात कर रहे हैं मगर जैसे ही मैं पास पहुँची वे वहाँ से हट गए। ज़ाहिर था मैंने उनका सम्मान गँवा दिया था क्योंकि डाबरी पर मैं उनके हक में खड़ी नहीं रही थी। मैंने फैसला किया इस सबको अनदेखा-अनसुना करूँगी और ऐसे जताऊँगी जैसे कुछ हुआ ही नहीं है।

मगर ये बच्चे एक ऐसे संगठन के बच्चे थे जो अपने हकों के लिए लड़ता है। अगले दिन सुबह मुझे समझ में आया कि कुछ-न-कुछ पक रहा है। सारे बच्चे जाग गए थे और मेरे उठने से पहले ही अपने सुबह के काम पूरे करके नहा रहे थे। मेरे पूछने से पहले ही उन्होंने मुझे बता दिया कि जब मैं उनके अधिकारों की रक्षा नहीं कर पाई हूँ, तो वे खुद अपने अधिकारों की रक्षा करेंगे।

"क्या?", मैं बुदबुदाई और आश्चर्य से दूसरे शिक्षक की ओर देखा। मगर वह भी हक्का-बक्का था।

"हम लोग चक्का जाम करेंगे।"

"सड़क पर?"

"नहीं, डाबरी के रास्ते पर। हम किसी जानवर को वहाँ पानी नहीं पीने देंगे और न ही किसी को बाँध से पानी लेने देंगे। यदि हमें नहीं तैरने देते तो हम किसी को भी पानी का उपयोग नहीं करने देंगे।"

"मगर संगठन ने वह डाबरी किसानों के लिए बनाई थी।"

"हमने भी तो श्रमदान किया था। हमने बाँध बनाने के लिए पत्थर उठाकर पहुँचाए थे। हर बच्चे ने चार पत्थर उठाए थे। और अब किसान तय कर रहे हैं कि हम इसका उपयोग नहीं कर सकते।"

"मगर... मगर... ", मैं बोली, "किसान तुम्हारे पालक हैं" मैंने यह बात भूरी की ओर देखते हुए कही थी। उसके पिता का बहुत सम्मान था।

"हाँ, मगर इसके कारण हमें चीज़ों को ठीक करने से कोई नहीं रोक सकता। पालक भी तो शोषक हो सकते हैं।"

मैं लगभग ज़ोर से हँस पड़ी। ये लोग तो बड़ों की जुबान बोल रहे थे। मगर तीस जोड़ी घूरती निगाहों ने मेरी हँसी को रोक दिया। इसके बाद बच्चे डाबरी की ओर जाकर कच्ची सड़क पर बैठ गए। कुछ बच्चों ने नीचे जाकर वहाँ खड़े सारे जानवरों को हाँक दिया और खेतों की ओर जाने वाली सारी नहरों को पत्थरों से बन्द कर दिया। थोड़ी ही देर में भौंचक्के किसान डाबरी पर पहुँचने लगे और बच्चों ने नारेबाज़ी शुरू कर दी - "ये डाबरी कुणिंची? आमरी छे, आमरी छे!"

कुछ किसान हँसने लगे, "शैतानों, यह सब क्या हो रहा है?"

"अरे, इन्हें देखो तो, इन्होंने हमारी नहरें बरबाद कर दी हैं।"

"क्या खेल चल रहा है?"

पहले तो बड़े लोगों को लगा कि यह कोई मज़ाक है। जब उन्हें समझ में आ गया कि यह मज़ाक नहीं है, तब भी उनका ख्याल था कि थोड़ा प्यार मगर सख्ती से समझाने-बुझाने से काम चल जाएगा। मगर धीरे-धीरे सबको समझ में आ गया कि बच्चे संजीदा हैं। "हमने भी यह बाँध बनाने में मदद की है, आप हमें दूर नहीं रख सकते।"

"चलो उठो और स्कूल जाओ। बहुत हो गया", एक बुजुर्ग ने रुखेपन से कहा और एक बच्चे को थोड़ा खींचा।

सौदेबाज़ी देर तक चली। अन्तत: बच्चों ने अपनी बात मनवा ली। उन्हें तालाब में तैरने की इज़ाज़त मिल गई, बशर्ते कि वे पानी को बहुत न छपछपाएँ और जानवरों को डराकर न भगाएँ।

पहाड़ी पर ऊपर खड़े-खड़े मैं उनकी बातचीत सुन रही थी और मुझे उनकी जीत का पता चल गया था। लौटकर उन्होंने मुझे घूरा। मैं और दूसरा शिक्षक मछली लाए थे और दावत की तैयारी कर रहे थे। मगर वे टस से मस नहीं हुए। "हम तुम्हें यह कहना चाहते हैं कि तुम्हें हमारा साथ देना चाहिए। हमने तुम पर भरोसा किया मगर तुमने दगा किया।"

मैंने कहा, "मगर मैं बड़ों के खिलाफ तुम्हारा साथ नहीं दे सकती। वही लोग तो मुझे तनखा देते हैं।"

"मगर तुम यहाँ हमारे साथ रहती हो। तुम्हारा फर्ज़ है सच का साथ देना।"

मैं जानती थी कि यह एक ऐसी दलील थी जिसे मैं इंकार नहीं कर सकती थी। तो मैं चुप रही।

"चलो, खाना खा लो। खाना ठण्डा हो रहा है।" मैंने कहा।

बच्चों ने मेरी ओर देखा।

"हाँ, सॉरी।" बहुत कमज़ोर-सी बात थी मगर मुझे और कुछ सूझा नहीं।

थोड़ी फुसफुसाहट हुई। और फिर 30 नन्हे लोग बैठ गए और खाने पर ध्यान देने लगे और मैंने उन पर ध्यान देने का निर्णय लिया। आज उन्होंने अपना अधिकार जीता था। चकमक

चित्र: वृशाली जोशी

बौरा गए हैं आम

किशोर पंवार

फोटोग्राफ: एकंगा

इन दिनों आम के पेड़ अलग ही नज़र आते हैं। कभी हरी-गुलाबी पत्तियों के कारण तो कुछ हरे-पीले बौरों के कारण। आम के पेड़ों पर वसन्त अप्रैल में भी अपनी मादक सुगन्ध लिए इठला रहा होता है।

आम की मंजरी जिसे हम मौर या बौर कहते हैं वास्तव में आम के फूलों का गुच्छा होता है। ये आधे फुट से एक फुट तक लम्बे होते हैं और अकसर पूरा पेड़ इनसे लदा होता है। शायद इसी को देखकर किसी ने कहा होगा देखो वसन्त में आम बौरा गया है। बौराने का एक अर्थ होता है – पगलाना। महकते फूलों के गुलदस्तों से लदे आम के पेड़ों को देखकर सचमुच लगता है कि वे बौरा गए हैं।

तुमने शायद ध्यान दिया होगा कि आम के बौर अलग-अलग रंग के होते हैं पीले, गुलाबी, यहाँ तक कि चॉकलेटी भी होते हैं। जितनी तरह की आम की किस्में उतनी तरह की आम की मंजरी।

आम के फूलों का गुच्छा रंगीन होने के साथ-साथ रस भरा और सुगन्ध वाला भी होता है। इस कारण इन पर तरह-तरह के कीट-पतंग मँडराते रहते हैं। भंवरे, मधुमक्खियाँ, भृंग (Beetle), तितलियाँ...। ये सब फूलों का रसपान करते हैं और इस बीच फूलों का परागण भी करते हैं। तभी तो हमें खाने को रसीले आम मिल पाते हैं।

तुम्हें यह जानकर अचरज होगा कि आम की हरेक मंजरी में लगभग 600 तक फूल होते हैं। फूल छोटे होते हैं पर होते बड़े सुन्दर हैं। इनकी पँखुड़ियों पर नारंगी धारियाँ बनी होती हैं। हरेक मंजरी में दो प्रकार के फूल होते हैं, एक नर और दूसरे नर-मादा एक साथ (या उभयलिंगी फूल)। फूलों में पाँच पुंकेसर होते हैं। इन में से एक ही में पराग बनता है। बाकी सब ठूठ होते हैं। पँखुड़ियों और अण्डाशय के बीच एक मांसल डिस्क होती है। द्विलिंगी फूलों का अण्डाशय थोड़ा तिरछा होता है।

आम के बौर के बारे में इतना जान लेने के बाद यह सवाल मन में आता है कि आम के पेड़ पर फूल तो लाखों की संख्या में खिलते हैं फिर फल कुछ हज़ार या इससे कम क्यों?

चक मक

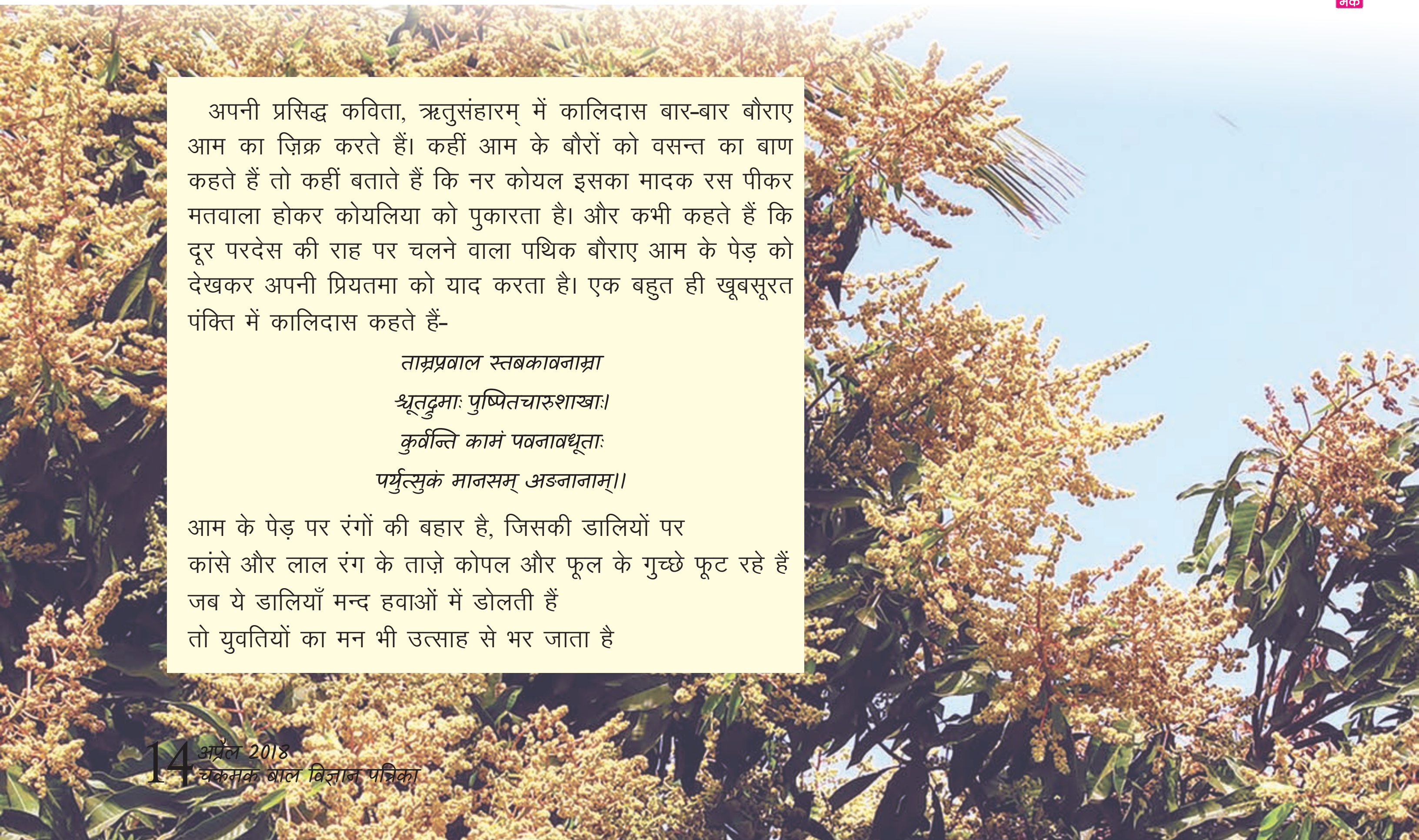

अपनी प्रसिद्ध कविता, ऋतुसंहारम् में कालिदास बार-बार बौराए आम का ज़िक्र करते हैं। कहीं आम के बौरों को वसन्त का बाण कहते हैं तो कहीं बताते हैं कि नर कोयल इसका मादक रस पीकर मतवाला होकर कोयलिया को पुकारता है। और कभी कहते हैं कि दूर परदेस की राह पर चलने वाला पथिक बौराए आम के पेड़ को देखकर अपनी प्रियतमा को याद करता है। एक बहुत ही खूबसूरत पंक्ति में कालिदास कहते हैं-

ताम्रप्रवाल स्तबकावनाम्रा
श्चूतद्रुमाः पुष्पितचारुशाखाः।
कुर्वन्ति कामं पवनावधूताः
पर्युत्सुकं मानसम् अङ्गनानाम्।।

आम के पेड़ पर रंगों की बहार है, जिसकी डालियों पर
कांसे और लाल रंग के ताज़े कोपल और फूल के गुच्छे फूट रहे हैं
जब ये डालियाँ मन्द हवाओं में डोलती हैं
तो युवतियों का मन भी उत्साह से भर जाता है

एक यात्रा उत्तरी ध्रुव की ओर ... 1

साइकिल पथ और बैंगन का सलाद

चित्रा विश्वनाथन

पिछले साल जनवरी में हम कुछ भाई-बहनों ने तय किया कि हम गर्मी की छुट्टियों में स्कैंडिनेविया जाएँगे। इसका एक आकर्षण तो यह था कि यह उत्तरी ध्रुव के पास है और दूसरा यह कि कम खर्च में भी यहाँ घूमा जा सकता है। स्कैंडिनेविया तीन देशों का समूह है - नार्वे, डेनमार्क और स्वीडेन।

धरती के एकदम उत्तर में, ठीक उत्तरी ध्रुव के पास हैं ये देश। अगर तुम नक्शे में ढूँढो तो पाओगे कि यूरोप के उत्तर में भालू या शेर के आकार का एक प्रायद्वीप है। प्रायद्वीप यानी वह ज़मीन जिसके तीनों तरफ सागर हो। इस प्रायद्वीप को स्कैंडिनेविया कहते हैं। इसके ठीक दक्षिण में एक और प्रायद्वीप है जिसे डेनमार्क कहते हैं - ये भी स्कैंडिनेविया का हिस्सा है। हमारी यात्रा इसी देश से शुरू हुई।

हम पन्द्रह लोग थे जिनमें चार-छः बच्चे भी थे। कुछ तो अपने आपको बच्चा मानते भी नहीं थे, कॉलेज में जो पढ़ते थे। स्कैंडिनेविया यात्रा को लेकर हमारी दो बड़ी चिन्ताएँ थीं, एक वहाँ की सर्दी और दूसरा वहाँ का खाना। हालाँकि हम गर्मी में जा रहे थे, फिर भी चेन्नई की तुलना में वहाँ बहुत ठण्डा होता है। जहाँ चेन्नई का तापमान 35 से 40 डिग्री सेल्सियस रहता है वहीं वहाँ का तापमान बस 15 से 20 डिग्री। तो हर साईज़ के गर्म कपड़े खोज निकाले गए और सूटकेसों में पैक किए गए। हम में से ज़्यादातर शाकाहारी थे और हमने सुन रखा था कि वहाँ हमारे खाने लायक कुछ भी नहीं मिलेगा। सो हमने तीन-चार बक्सों में थेफला, खाखरा, अचार, चटनी, नमकीन और तुरन्त तैयार होने वाले रसम और दाल भर लिए।

हमने एक ट्रैवल कम्पनी से सम्पर्क किया जो दुनिया भर के लोगों को स्कैंडिनेविया घुमाती है। जब हम हवाईजहाज़ से कोपैनहैगन शहर में उतरे तो श्री थियो हमसे मिले। हमारी पूरी यात्रा के दौरान वे ही हमारे गाईड बने रहे। थियो हमें एक होटल में ले गए जहाँ मुझे पन्द्रहवीं मंज़िल पर कमरा मिला। ऊपर खिड़की से देखने पर यह एक सुन्दर-सा शहर लगा, जिसमें कई ऊँची-ऊँची इमारतें हैं और बहुत से तालाब और हरियाली।

चित्र 1 होटल से कोपेनहैगन शहर का नज़ारा

चित्र 2 कोपेहैगन के सायकल सवार

चित्र 3 बैंगन का सलाद!

थोड़ा आराम करने के बाद हम ने सोचा कि हम कुछ देर पैदल चलकर इस शहर के नज़ारे देखें। थियो ने हमें चेताया कि सड़कों पर ध्यान से चलना और कभी भी साइकिल पथ पर मत चलना। जब हम कुछ देर पैदल चले तो उनकी चेतावनी का मतलब समझ आया। कोपैनहैगन साइकिल वालों का शहर है। यहाँ हर सड़क में एक अलग साइकिल पथ होता है जिसमें लोग बहुत तेज़ी-से साइकिल चलाते निकलते हैं। जिस तरह चौपहिया वाहनों के लिए सिग्नल होते हैं वैसे ही यहाँ साइकिल पथ पर भी सिग्नल होते हैं। थियो ने बताया कि इस शहर में जितने लोग हैं उतनी ही साइकिल भी हैं। शहर के आधे से ज़्यादा लोग साइकिल से ही काम पर या पढ़ने जाते हैं।

उस दिन हमें बीस लोग और मिले जो इस टूर में हमारे साथ होने वाले थे। इनमें से ज़्यादातर लोग अमरीका के थे और कुछ फिलिपाईंस और ऑस्ट्रेलिया के। अगले चौदह दिन हम सब साथ यात्रा करने वाले थे। यात्रा एक सुविधासम्पन्न बस में होनी थी जो ज़मीन और पानी दोनों में हमारे साथ रही (जहाँ हमें समुद्र पार करना होता यह बस भी नाव में हमारे साथ होती।) हम लोगों ने पीछे की सोलह सीट ले लीं।

रात में टूर के आयोजकों ने हम सब के लिए विशेष भोज का आयोजन किया। लेकिन उनको समझ नहीं आया कि हमारे लिए शाकाहारी भोजन कैसे बनाएँ। कच्ची सब्ज़ियाँ, फल और अधपके चावल से काम चलाना पड़ा। जब कमरे में लौटे तो हम सबने घर से लाए नमकीन का सहारा लिया।

दो दिन बाद आयोजित ऐसे भोज में हम पर तरस खाकर कुछ शाकाहारी भोजन तैयार किया गया। सूप और मीठा तो अच्छा था मगर मुख्य आइटम बैंगन हमसे खाया न गया। बैंगन के टुकड़े करके उसके बीच बहुत कलात्मकता के साथ हरी पत्ती, टमाटर और प्याज़ परोसा गया था। उन्हें मक्खन लगाकर हलके से सेका गया था। अधपके बैंगन कैसे खाएँ हमे समझ न आया। हम बस उसे निहारते रहे।

जारी...

फोटोग्राफ: चित्रा विश्वनाथन

एडोल्फ बनाम रुडोल्फ

दो भाई और
जूतों की दो कम्पनियाँ

अँग्रेज़ी में प्रस्तुति - विंध्या किल्लरु
अँग्रेज़ी से अनुवाद - सजिता नायर

यह कहानी दो भाइयों और जूते के दो ब्रांडों की है। बहुत साल पहले, आज से लगभग पिंच्यानवे साल पहले यह कहानी शुरू होती है। तब भयानक विश्व युद्ध खतम ही हुआ था और सब सैनिक घर लौटे ही थे। जर्मनी का एक सैनिक एडोल्फ डासलर भी घर लौटा और अपने लिए काम खोजने लगा। उसने अपने घर के एक छोटे कमरे में खेल के जूते बनाना शुरू किया। एडोल्फ का परिवार पहले से ही जूते और चप्पल बनाने का काम करता था। एडोल्फ लगातार अपने जूतों में सुधार करता रहा ताकि वह खेल के मैदान में खिलाड़ियों के लिए आरामदायक बनें। उसे इसमें इतनी सफलता मिली कि उसने खिलाड़ियों के लिए जूते बनाने वाली फैक्ट्री डालने की सोची। जुलाई, 1924 में उसने अपने भाई रुडोल्फ के साथ मिलकर डासलर ब्रदर्स शू फैक्ट्री की शुरुआत करी।

शुरुआती दौर में डासलर ब्रदर्स सिर्फ टैनिस के खिलाड़ियों के लिए जूते बनाते थे। फिर धीरे-धीरे उन्होंने अपना कारोबार बढ़ाकर, अन्य खेलों के लिए भी जूते बनाना शुरू किया। एडोल्फ खुद एक खिलाड़ी था। मगर अपने जूतों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए वह हमेशा अपने खिलाड़ी ग्राहकों से मिलकर उनकी ज़रूरत को समझता था और उसी अनुसार जूतों में बदलाव करता था। खिलाड़ी भी उनके जूतों को पसन्द करने लगे क्योंकि वे हलके व आरामदायक थे और उनकी बनावट सहज थी।

1936 के ओलम्पिक गेम्स के कई विजेता खिलाड़ियों ने इन्हीं के जूते पहने थे। इन में जेस्सी ओवेंस भी शामिल थे जो ओलम्पिक पदक जीतने वाले पहले अफ्रीकी अमरीकन खिलाड़ी थे। खेल से पहले एडोल्फ ने उनसे मिलकर उन्हें अपनी कम्पनी के जूते पहनकर दौड़ने के लिए मना लिया था। उस प्रतियोगिता में ओवेंस ने चार स्वर्ण पदक जीतकर विश्व रिकार्ड बनाया था। उसके बाद डासलर ब्रदर्स को कभी पीछे देखने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

इसी दौरान जर्मनी में नाज़ी पार्टी का दबदबा बढ़ने लगा। दोनों भाई उसमें शामिल तो हुए पर रुडोल्फ की रुचि पार्टी में ज़्यादा रही। इस वजह से दोनों में काफी झगड़े होने लगे। इस बीच दूसरा विश्व युद्ध शुरू हो गया ओर डासलर कम्पनी अब सैनिकों के लिए जूते बनाने लगी। युद्ध के अन्त में रुडोल्फ अमरीका द्वारा बन्दी बनाया गया और अन्त में जब वह घर लौटा तो चीज़ें बदल चुकी थीं। दोनों भाइयों के बीच किसी बात को लेकर बहुत बड़ा झगड़ा हुआ। झगड़े का कारण तो किसी को नहीं पता चला पर उस झगड़े का परिणाम यह रहा कि डासलर ब्रदर्स कम्पनी बन्द हो गई और उसकी जगह दो नई कम्पनियों की शुरुआत हुई।

अलग होने के बाद एडोल्फ ने अपनी कम्पनी के हर एक पहलू पर ध्यान देना चालू किया। कम्पनी का विज्ञापन हो या कम्पनी के खर्चे या सबसे ज़रूरी कम्पनी का लोगो। एडोल्फ ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि उसकी कम्पनी की हर एक चीज़ बाकी से अलग और किफायती हो। अपने खुद के नाम को तोड़कर कम्पनी का नाम रखा एडोल्फ से 'एडी' और डासलर से 'डास'। इस तरह 'एडीडास' कम्पनी की शुरुआत हुई।

किसी भी कम्पनी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उसका 'लोगो' (कम्पनी का चिन्ह) होता है। जैसे नाम के साथ किसी व्यक्ति का चेहरा जुड़ा होता है उसी तरह एक कम्पनी की पहचान उसका 'लोगो' होता है। यह बात एडोल्फ भी बहुत अच्छे से जानता था। इसीलिए उसके लिए ज़रूरी था कि 'लोगो' ऐसा हो जिससे लोग उसकी कम्पनी को आसानी से पहचान लें। उस समय एक स्पोर्ट्स कम्पनी थी 'करहू'। एडोल्फ को उनका 'लोगो' इतना पसन्द आया कि उसने झट से वो कम्पनी खरीद ली और उनका 'लोगो' अपनी कम्पनी के नाम कर लिया। यह जानकर बड़ी हैरानी होती है कि 'एडीडास' के मशहूर तीन डण्डे कभी किसी और कम्पनी के हुआ करते थे। जो भी हो जल्दी ही एडीडास कम्पनी तीन लकीरों के लोगो से पहचानी जाने लगी।

इसी समय शहर के दूसरे छोर पर रुडोल्फ भी अपनी कम्पनी बनाने में व्यस्त था। उसने भी अपने नाम का इस्तेमाल करते हुए कम्पनी का नाम रुडा रखा। लेकिन बाज़ार पर इसका कुछ खास असर नहीं हुआ। यह देख रुडोल्फ ने अपनी कम्पनी का नाम बदलकर 'प्यूमा' रखा। यह नाम असल में रुडोल्फ की कम्पनी के लिए कारगार साबित हुआ। 'प्यूमा' शब्द किसी भी भाषा में आसानी से बोला जा सकता था।

एडीडास और प्यूमा दोनों कम्पनियाँ धीरे-धीरे जाने-माने नाम बनती जा रही थीं। पर साथ ही साथ दोनों कम्पनियों की आपसी होड़ भी ज़ोर पकड़ती जा रही थी। दोनों कम्पनियों के मज़दूरों को एक-दूसरे से मिलने पर पाबन्दी थी। यहाँ तक कि उस शहर में रह रहे लोग जो प्यूमा के जूते पहनते वे एडीडास के जूते पहने व्यक्ति से बात नहीं करते और ना ही एडीडास पहने हुए व्यक्ति प्यूमा के जूते पहने हुए व्यक्ति से। आए दिन शहर में छोटे-छोटे झगड़े होने लग गए। शहर के लोग दो गुट में बँट चुके थे एडीडास और प्यूमा।

दोनों भाई एक-दूसरे को हराने की दौड़ में पहले से कई गुना मेहनत करने लगे। मार्केट में ऐसे जूते आने लग गए जो पहले कभी नहीं देखे गए। शायद दोनों कम्पनियों की सफलता का कारण उनके बीच की यह कड़ी प्रतियोगिता रही है।

प्यूमा ने कम विज्ञापन के बावजूद मार्केट में अपना अच्छा दबदबा बना लिया था। दोनों कम्पनियाँ जल्द ही यह बात समझ गईं कि सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को अपनी कम्पनी का एम्बेसडर बनाना और कम्पनी के जूते पहनकर उनका खेल जीतना कम्पनी के लिए लॉटरी जीतने के बराबर होगा। विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ियों को अपने ब्रांड एम्बेसडर बनाने की होड़ के कई किस्से प्रचलित हैं। 1960 के ओलम्पिक खेल में 100 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक अर्मिन हैरी को

मिला। इस दौड़ से पहले वह एडीडास के जूते पहनता था। मगर ऐन मौके पर प्यूमा ने उसे फाइनल दौड़ में अपने जूते पहनकर दौड़ने के लिए राज़ी करके पैसे भी दे दिए। हैरी जीता तो मगर पुरस्कार लेते समय उसने प्यूमा के जूते न पहनकर एडीडास के जूते पहने ताकि दोनों कम्पनियों से पैसे वसूल कर सके। नतीजा क्या रहा होगा तुम खुद कल्पना कर सकते हो।

1968 के ओलम्पिक खेलों में प्यूमा को बढ़त मिली जब दो महान अश्वेत खिलाड़ियों टामी स्मिथ और जान कार्लोस ने उसके जूते पहनकर प्रतियोगिता में पहला और दूसरा स्थान प्राप्त किया। यही नहीं दोनों अश्वेत खिलाड़ियों ने ओलम्पिक मैडल मंच पर अमरीका और दक्षिण अफ्रीका में अश्वेतों के विरुद्ध भेदभाव का विरोध किया। इस कारण एक ओर उन्हें खेल से बाहर कर दिया गया मगर वे दुनिया भर के समानता आन्दोलन के नायक बन गए। इसका फायदा प्यूमा को भी मिला।

1971 में एडोल्फ ने अपनी कम्पनी का कार्यक्षेत्र बढ़ाया और नए लोगो के साथ मार्केट में अपने नए प्रोडक्ट्स को लॉन्च किया। अब उसने खेल के दौरान पहने जाने वाले कपड़ों के अलावा रोज़मर्रा के लिबासों को बाज़ार में उतारा। उसका नया लोगो था तीन फैलती हुई पत्तियाँ जिनके नीचे तीन लकीरें खिंची हुई हैं। इस लोगो में जो तीन पत्तियाँ हैं वो असल में एडीडास के विकसित करते रहने की चाहत को दर्शाती हैं।

adidas

यह लोगो एडीडास कम्पनी के लिए बहुत सफल साबित हुआ – इस लोगो को हम आज भी देखते हैं। यकीनन इस पहल के चलते एडीडास ने विश्व स्पोर्ट्सवेयर के क्षेत्र में अपनी एक अलग और मज़बूत जगह बना ली।

मगर अभी तो और बहुत से बदलाव आने बाकी थे। 1997 में एडीडास ने अपना वह लोगो लॉन्च किया जिससे आज हम सबसे ज़्यादा परिचित हैं। तीन तिरछी लकीरें जो इस तरह जमीं हैं जैसे पहाड़ का ढलान हो। लोगो यह कहना चाहता था कि ये जूते वगैरह आपको ऊँचाई की चोटियों तक पहुँचाएँगे। यह लोगो सर्वाधिक लोकप्रिय और मशहूर हुआ और आज भी हम इस कम्पनी के उत्पादों को इसी से पहचानते हैं।

दोनों कम्पनियों की प्रतिस्पर्धा दुनिया भर में मशहूर थी मगर एक तरह से इसका फायदा पहुँचा खिलाड़ियों को जिन्हें नए-नए प्रकार के जूते मिले और साथ-साथ विज्ञापन के पैसे भी।

आखिरकार, वर्ष 2009 में विश्व शान्ति दिवस के दिन प्यूमा के सर्वोच्च अधिकारी ने एडीडास को दोस्ताना फुटबॉल मैच के लिए आमंत्रित किया। इस मैच में प्यूमा की 7-5 से जीत हुई थी। इस खेल से दोनों कम्पनियों द्वारा सालों से चल रही जंग पर विराम लग गया। लेकिन खेल सामग्री बाज़ार में इनकी प्रतियोगिता अब भी जारी है।

(विंध्या किल्लरू ऋषि वैली स्कूल में कक्षा ग्यारहवीं में पढ़ती हैं।)

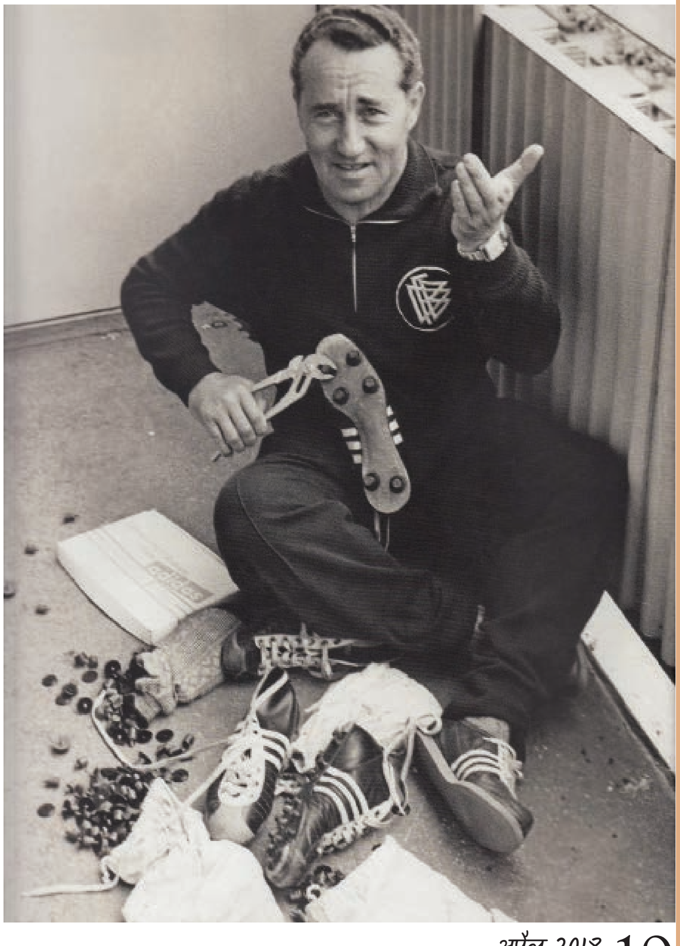

क्लास की नीरस खाली दीवारें अकसर बेचैन कर देती हैं। ब्लैकबोर्ड भी इन दीवारों जैसा ही सपाट बेरंग लगता है जो चॉक की सफेदी में हर दिन अपना अस्तित्व खो देता है। साइंस लैब, लाइब्रेरी, ड्राइंग रूम और मैदान की सीमा से बाहर भी कुछ ठिकाने हैं जो हमारी बेचैनियों को बाँटने का अड्डा बनते हैं। गैलरी के पास बड़े-बड़े गोल छेदों वाली दीवार मुझे बुलाती है। गर्मियों में इन छेदों से ठण्डी हवा के झोंके अन्दर आते हैं और सर्दियों में धूप छनकर फर्श पर एक खूबसूरत डिज़ाइन में फैल जाती है। हम ठिठुरते हुए उस धूप में गुट बनाकर बैठ जाते हैं। फर्श की धूल को फूँक मारकर उड़ाते और एक घेरा बना लेते। कभी-कभी लूडो बीच में रखकर एक-दूसरे से शर्त लगाते। आधी छुट्टी का पूरा समय और कई बार तो खाली पीरियड भी वहीं गुज़रता।

पेपरों के समय किताबें लिए कुछ वहाँ बैठकर पढ़ती दिखाई देतीं तो कुछ बातें करती हुईं। जब कभी हाउस वाली लड़कियाँ वहाँ ड्यूटी देती हैं और हम अपनी क्लासों में कैद हो जाती हैं तब वह जगह सूनी नज़र आती है।

एक रोज़ हम सब वहीं बैठे थे, सोलह पर्ची का खेल चल रहा था। खेलते-खेलते काफी देर हो गई थी। आधी छुट्टी कब बन्द हो गई पता ही नहीं चला। हमारे पास बातों की एक बड़ी-सी पोटली थी कि अचानक एक मैडम ने दूर खड़े होकर ज़ोर से सीटी बजाई। हम सब अपनी जगह पर खड़े-खड़े हिल गए। पीछे मुड़कर देखा तो उनके हाथ में एक मोटा डण्डा था, वह हमारी तरफ ही बढ़ रही थीं फिर तो हमने भी वो रफ्तार पकड़ी कि एक-दूसरे को भी भूल गए और धक्का-मुक्की करते हुए

बेताबियों के अड्डे

अलीशा

चित्र: निखिल खत्री

वहाँ से फरार हो लिए। क्लास में जाकर हम खूब हँसे। अब हम जब भी उस जगह बैठते तो बड़े ही होशियार रहते।

वहाँ बैठने के लिए टाइलों वाला एक बढ़िया सीढ़ीदार चबूतरा और शहतूत का बड़ा-सा पेड़ है। यहाँ सभी अकसर घनी और ठण्डी छाया तलाशते हुए पहुँचते हैं। पहले यहाँ मठरी की दुकान हुआ करती थी। ग्रिल के उस पार हथेलियाँ ताने चिल्लाते हुए हम सब कहतीं, 'आंटी, मेरी चार मठरी, आंटी, पहले मुझे छह दे दो, नहीं मेरी तीन, अरे भाई, सात इधर पकड़ा दो' ढेरों चेहरे एक भीड़ में घुले-मिले दिखाई देते। यह जमघट तब तक बना रहता जब तक कि दुकान पर मठरी खत्म न हो जाती।

अपनी सहेलियों के गुट में या किसी खास जोड़ीदार के साथ हम सब उसी चबूतरे पर बैठ जातीं। आधी छुट्टी बन्द होने के बाद भी कुछ लड़कियाँ क्लास में न जाकर दीवार की आड़ में छुपकर वहीं बैठी रहतीं क्योंकि वहाँ किसी टीचर का आना-जाना कम ही होता है इसलिए एक बेखौफ ठिकाने के रूप में यह जगह ज़्यादातर साथियों की पसन्दीदा है। इस पसन्द को वे सिर्फ क्लास से बाहर की जगहों पर ही कायम नहीं रखते, क्लास के भीतर भी कई ऐसे कोने हैं जहाँ बातचीत की महफिल सजती है। इस महफिल में अन्य क्लासों के साथी भी आकर जुड़ जाते हैं। यहाँ खिड़कियाँ सिर्फ रोशनदान नहीं बल्कि एक खुली दुनिया को ताकने का ज़रिया बनती हैं। सुबह-सुबह क्लास में झगड़े का विषय यही होता है कि खिड़की के साथ वाली डेस्क पर कौन बैठेगा।

रितिका अकसर अपनी सहेलियों से इसी विषय पर बहस करती नज़र आती है। रोज़ सुबह एक बेंच खिसकाकर वह खिड़की के पास लगाती है और शान से वहाँ बैठ जाती है। उस खिड़की से स्कूल के पीछे की गली नज़र आती है। उस गली से गुज़रते लोग, फेरी वाले इत्यादि को वह दिनभर देखती रहती है। वहाँ की आवाज़ों को ध्यान से सुनती रहती है, मानो वह अपनी ही गली में बैठी है। वह खुद को बँधा हुआ महसूस नहीं करती।

परिचय

अलीशा, उम्र सोलह साल। राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, सैक्टर 5, दक्षिणपुरी नई दिल्ली-62, में बारहवीं कक्षा की छात्रा हैं।

अलीशा को लिखने में मज़ा आता है। वह पिछले छह सालों से अंकुर की नियमित रियाज़कर्ता हैं। .

अध्यापिका- 1869 में क्या हुआ था?
छात्र- गांधी जी का जन्म।
अध्यापिका- 1873 में क्या हुआ था?

छात्र- गांधी जी 4 साल के हो गए थे?

चित्र: शुभम लखेरा

अद्भुत ततैया ये

एक ततैया ने किया.....!

सबसे पहले कागज़ बनाने का काम इंसानों ने नहीं किया, बल्कि एक छोटी ततैया ने किया।

कागज़ ततैया अपना छत्ता बनाने के लिए पौधों के तनों और लकड़ी के रेशे चबाकर और उस में अपना लार मिलाकर कागज़-जैसी एक सामग्री तैयार करती हैं। यह कॉलोनी में रहती हैं और इनकी मुखिया एक रानी होती है।

दूसरी ओर कुम्हार ततैया अपना छत्ता मिट्टी से बनाती हैं और आमतौर पर अकेले रहती हैं।

हालाँकि ज़्यादातर ततैया परजीवी होती हैं - वे दूसरे जीवों से अपना भोजन प्राप्त करती हैं और अकसर उन्हें मार भी देती हैं। इनमें से अधिकांश इतनी छोटी होती हैं कि हम उन्हें देख भी नहीं सकते।

फील्ड डायरी

याद रहे कि आमतौर पर अपने छत्तों से दूर होने पर ततैया डंक नहीं मारती हैं लेकिन अपने छत्तों के आसपास होने पर वो आक्रामक हो सकती हैं। तो, उनके या उनके छत्तों के बहुत नज़दीक मत जाना - ततैया का डंक दर्दनाक हो सकता है और खतरनाक भी।

ततैया का पीछा करना

एक बार जब तुम्हें ततैया दिख जाए तो थोड़ी देर के लिए उसका पीछा करो, उम्मीद है कि वह तुम्हें अपने छत्ते तक ले जाएगी। तुम किसी खिड़की के पीछे या पेड़ की डाल पर भी कागज़ ततैया के छत्तों को देखने की कोशिश कर सकते हो। कुम्हार ततैया के छत्तों को ढूँढो। यह अकसर कुर्सी के नीचे या उसके पाए पर, परदे के पीछे या बिजली के सॉकेट के अन्दर मिट्टी भरकर अपना छत्ता बनाती हैं।

ततैया या मधुमक्खी

मधुमक्खियों के शरीर पर बाल होते हैं जबकि ज़्यादातर ततैयों के शरीर पर बाल नहीं होते। अधिकांश ततैयों की कमर पतली होती है जबकि मधुमक्खियों की कमर मोटी होती है।

nature
conservation
foundation
science for conservation

नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन
द्वारा विकसित

रुककर पता लगाओ

एक बार जब तुम्हें ततैया का छत्ता मिल जाए, तो अगले दस दिनों तक रोज़ाना पाँच मिनट के लिए उसे ध्यान से देखो। इस दौरान तुम्हें छत्ते में जो भी बदलाव नज़र आएँ उन्हें अपनी डायरी में लिखते जाओ।

बताओ कि

तुम्हें किस तरह का छत्ता मिला? वह मिट्टी का बना है या कागज़-जैसी किसी सामग्री का? छत्ता तुम्हें कहाँ मिला - घर के अन्दर, बगीचे में, दीवार पर या फिर किसी पेड़ पर? छत्ते में तुमने कितने ततैयों को आते-जाते देखा? तुमने जिन ततैयों को देखा उनके चित्र बनाओ और उनके पैटर्न व रंगों के बारे में बताओ। इन ततैयों की अन्दाज़न लम्बाई क्या होगी?

ततैया का डंक मारना

डंक मारने के लिए ततैया अपने पेट पर पाई जाने वाली एक नुकीली सुई का इस्तेमाल करती हैं और इसी के जरिए अपना ज़हर (venom) अन्दर डालती हैं। इस ज़हर में कई रसायनों का मिश्रण होता है जिसकी वजह से दर्द होता है और कीड़े पंगु (paralyzed) हो जाते हैं। वास्तव में एक अकेली मादा कुम्हार ततैया अण्डे देने के लिए एक 'घड़ेनुमा' घोंसला बनाती है और इसमें अपने जहर से पंगु किए कीड़े को भी रखती है ताकि जब लार्वा निकले तो उसके खाने के लिए कुछ मौजूद हो।

चकमक के पते पर हमें अपने अवलोकन
और ततैयों के चित्र भेजना...

तुम्हारे घर में कौन-कौन रहता है?

पिछले अंक में हमने तुम्हें अपने घर के सभी निवासियों के बारे में हमें लिख भेजने को कहा था। यहाँ पौड़ी गढ़वाल से अनुभव चमोली और भोपाल से अरुणा द्वारा भेजे गए जवाब पढ़ो और अनुभव द्वारा खींचे फोटो देखो।

तुम्हारे जवाब का इन्तज़ार रहेगा।

मम्मी सो रहीं थीं और यह दोपहर की बात है। मैं कूलर के आगे वाले पलंग पर लेटी हुई थी, अचानक से एक उड़ती चिड़िया हमारे घर में छत की सीढ़ियों से आ गई। और बाहर आँगन वाले पंखे के ऊपर जाकर बैठ गई और चीं-चीं करने लगी। चीं-चीं की आवाज़ सुनकर जब मैं बाहर आई तो देखा, वो तो आँगन से ही आ रही है और चिड़िया पंखे पर ही बैठी है। ऐसे तो हमारे घर में बहुत सारे जीव रहते हैं। और कुछ तो हमें दिखते भी नहीं हैं। पर जो किसी भी तरह दिख जाते हैं चलते-फिरते या इधर-उधर घूमते उन में से सबसे पहले तो हैं चींटियाँ, फिर मक्खियाँ जो कभी-कभार कहीं से भी आ जाती हैं और फिर मच्छर। कभी टिड्डे भी आते हैं उछलते-कूदते हुए। छिपकलियाँ, तितलियाँ, कॉकरोच आदि जीव तो आते-जाते रहते हैं। पर चिड़िया हमारे घर में पहली बार आई थी। मैं बहुत खुश हुई। मैं उसकी पूरी खातिरदारी करना चाहती थी। पर वो हमारे घर में फँस गई थी। जहाँ से आई थी वो जगह उसे वापस नहीं मिल रही थी। घूमते-घूमते वो हमारे घर के काँच पर आ बैठी। और वहाँ वो अपने आप को काँच में देखकर चोंच मारे जा रही थी। मैं चाहती थी कि उसे वापस वह रास्ता मिल जाए जहाँ से वो आई थी। तो मैंने उसे सीढ़ियों की तरफ उड़ाने की कोशिश की पर वो उधर जा नहीं पा रही थी। बहुत कोशिश के बाद मैं थककर बैठ गई और उसे हमारे घर में इधर-उधर घूमते हुए देखती रही। फिर वो अपने आप सीढ़ियों की तरफ उड़ती हुई बाहर निकल गई।

अरुणा, तेरह वर्ष, भोपाल, म. प्र.

मेरे घर में मैं और मेरा छोटा भाई मृगाँक रहते हैं। मेरे दादा और मेरी दादी जी रहती हैं। मम्मी और पापा रहते हैं। हमारे घर में पाँच बिल्लियाँ हैं। दो बिल्लियाँ तो हमेशा रहती हैं। और तीन बिल्लियाँ चली भी जाती हैं। और चूहे भी हैं और छछून्दर भी हैं। छछून्दर कभी-कभी आते हैं। कभी-कभी साँप भी निकलते हैं। पीछे पुश्तार है और घर के खेत हैं जो खाली हैं। इसलिए साँप आते हैं। हमारे घर में खूब सारी गौरैया रहती हैं। घर टीन की छत का है। इसलिए गौरैया अपना घर बना लेती हैं। पर ये जो बिल्लियाँ हैं ना चिड़ियाओं पर झपट लेती हैं। दीवारों पर कई बार मकड़ियाँ दिख जाती हैं। कई बार वो जाला बना लेती हैं। स्टोररूम, बाथरूम में तो यह मिल ही जाती हैं। रसोई में कॉकरोच हैं। पर यह ऐसी जगह छिप जाते हैं कि दवा से भी नहीं मरते। यहाँ पानी सुबह ही आता है और कई जगह चूता है। वहाँ मिट्‌टी में कई सारे केंचुएँ मिल जाते हैं। कई बार पत्थरों के नीचे मेंढक भी मिलते हैं। ये खूब सोते हैं। आस-पास गुलाब के पौधे हैं। चम्पा की बेल है। कई और फूलों के पौधे हैं। मधुमक्खियों को मैं पहचानता हूँ। पर कई सारे कीड़ों को मैं नहीं जानता। यहाँ ठण्डाई है तो मक्खियाँ और मच्छर कम दिखाई देते हैं। कम्बलकीड़ों को मैं देखता हूँ। चींटियाँ तो हमारे यहाँ काली और लाल रंग की होती हैं। मोटे पेट वाली और लम्बी टाँगों वाली चींटियाँ बहुत है। जंगली कबूतर और बुलबुल कम दिखती हैं।

अनुभव चमोली, दूसरी, केन्द्रीय विद्यालय पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

गणित है मज़ेदार!

इन पन्नों में हम कोशिश करेंगे कि आपको ऐसी चीज़ें दें जिनको हल करने में मज़ा आए। ये पन्ने खास उन लोगों के लिए है जिन्हें गणित से डर लगता है।

1.

अगर हम तुम्हें एक मज़ेदार पहेली दें तो क्या तुम हल करना चाहोगे?

♣ + ♣ = 10

तो ♣ = ?

यह ऐसी एक संख्या होगी जिसे दो बार जोड़ने से 10 बन जाएगा। तो यह संख्या 5 ही हो सकती है।

अब इसे देखो-

♠ + ♥ = 10

इसमें दोनों का मान 1 से 9 तक कुछ भी हो सकता है।

अगर ♠ = 1 है तो
♥ = 9 होगा।
अगर हम ♠ = 3 मानें तो
♥ = ?
क्या होगा तुम ही बताओ।

इसी तरह आगे की पहेलियों को हल करो और हमें बताना कि मज़ा आया कि नहीं।

2.

नीचे कुछ आकृतियाँ दी गई हैं जो संख्या 1, 2, 4 व 6 के बराबर हैं। क्या तुम बता सकते हो कि कौन-सी आकृति किस संख्या को दर्शाती है ताकि नीचे दिए गए दोनों सवाल सही हो जाएँ?

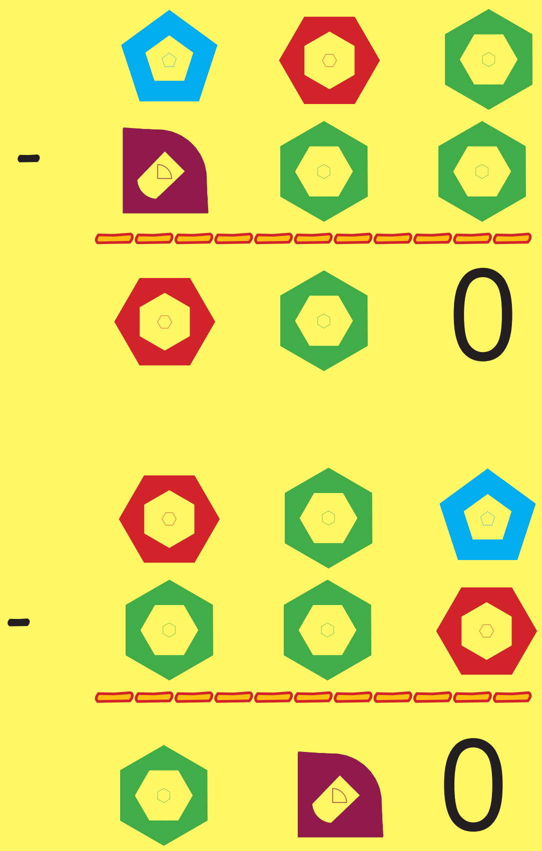

3. हाथ मिलाने की पहेली

इस पहेली को अलग-अलग चरणों में हल करके देखो कि ऐसा करते हुए तुम कितनी दूर तक जा सकते हो

चरण 1:

यदि एक कमरे में दो लोग हों और हरेक व्यक्ति वहाँ मौजूद हर दूसरे व्यक्ति से ठीक एक बार हाथ मिलाए तो कुल कितनी बार हाथ मिलाए जाएँगे?

चरण 2:

यदि कमरे में तीन लोग हों और हरेक व्यक्ति वहाँ मौजूद हर दूसरे व्यक्ति से ठीक एक बार हाथ मिलाए तो कुल कितनी बार हाथ मिलाए जाएँगे?

चरण 3:

यदि कमरे में चार लोग हों और हरेक व्यक्ति वहाँ मौजूद हर दूसरे व्यक्ति से ठीक एक बार हाथ मिलाए तो कुल कितनी बार हाथ मिलाए जाएँगे?

चरण 4:

यदि कमरे में पाँच लोग हों और हरेक व्यक्ति वहाँ मौजूद हर दूसरे व्यक्ति से ठीक एक बार हाथ मिलाए तो कुल कितनी बार हाथ मिलाए जाएँगे?

चरण 5:

तो अब यदि कमरे में छह लोग हों और हरेक व्यक्ति वहाँ मौजूद हर दूसरे व्यक्ति से ठीक एक बार हाथ मिलाए तो कुल कितनी बार हाथ मिलाए जाएँगे?

यदि 7 लोग हों तो....... ?

और यदि 8 लोग हों तो..... ?

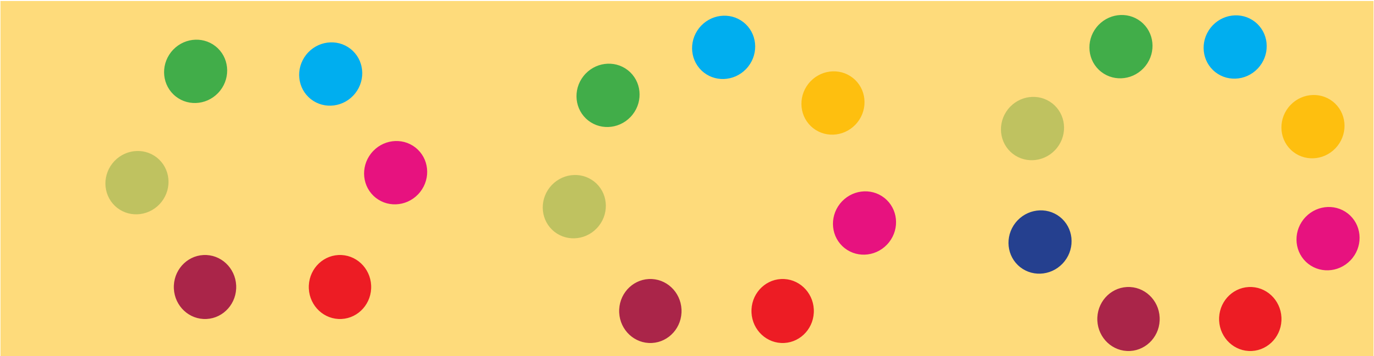

अपने सभी उत्तरों को ध्यान से देखो क्या तुम्हें कोई पैटर्न नज़र आता है?
क्या इस पैटर्न के आधार पर तुम इस सवाल के आगे के चरणों के जवाब खोज सकते हो?
तुम्हारी सहूलियत के लिए पेज 38 में इन पहेलियों के जवाब भी दिए गए हैं।

तराशा दिन और पत्थर का बीज

विनोद कुमार शुक्ल

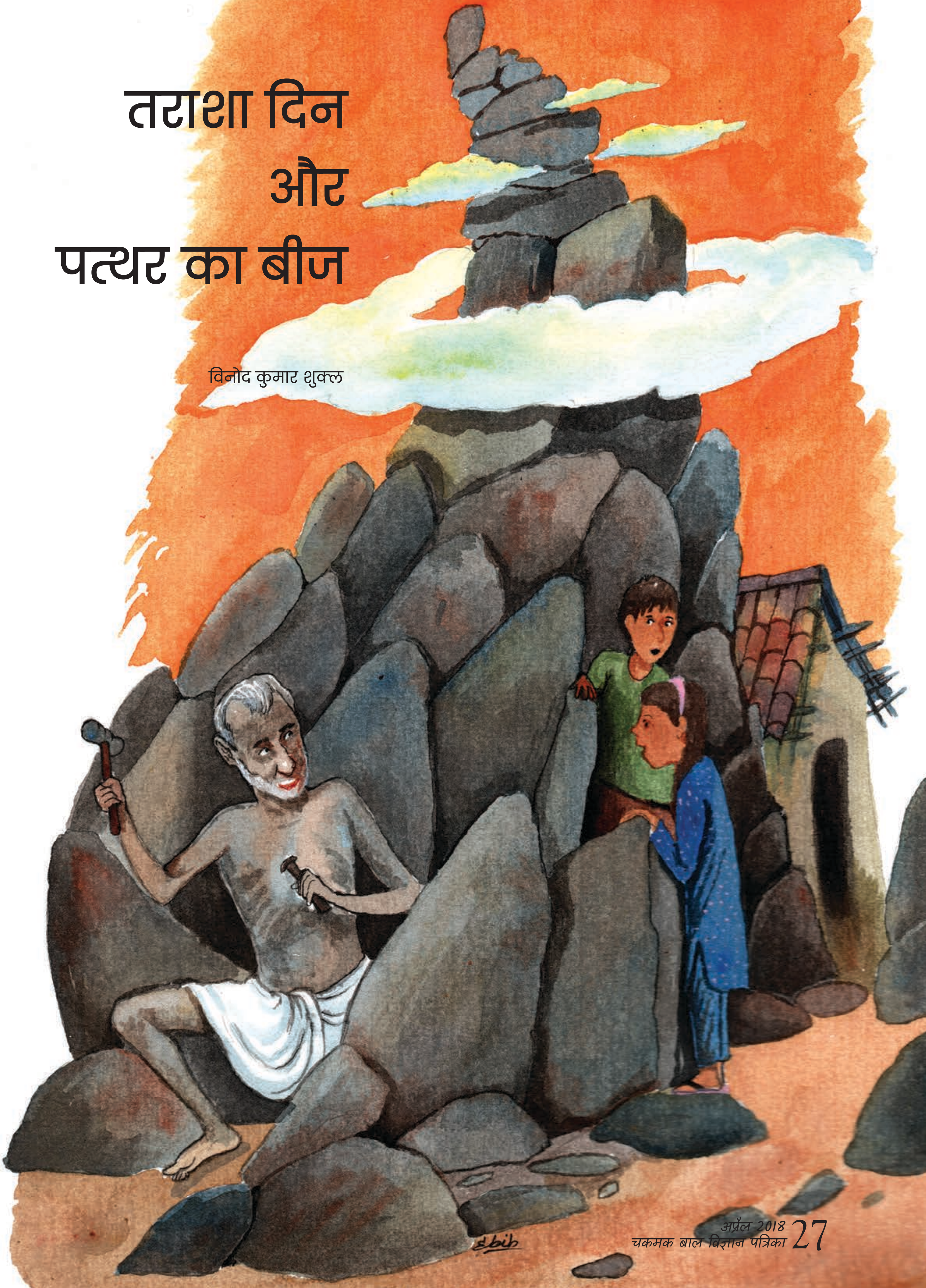

पीछे दौड़ते हुए सब दूर थे। सब ने जो देखा दूर से देखा कि बोलू ने दोनों हाथ उठाकर दोनों पत्थरों को हवा में झोंक लिया है। सयाने बाबा बोलू के साथ झोंपड़ी के अन्दर जाते हुए भी दिखे। अपने पीछे रह जाने पर सबको चिढ़ हो रही थी। भैरा, जो सबसे पहले होना चाहता था, सबसे पीछे था। सबसे पिछड़ा हुआ वही अकेला। दौड़ने की बजाए भैरा धीरे-धीरे सुस्ताकर चलने लगा था। जब वह देर से उनके पास पहुँचा तो एक पैर की एड़ी उठाए लँगड़ाते चलने लगा। किसी के पूछने के पहले ही उसने बताया, काँटा लग गया। इस तरह बोलकर वह सबसे पीछे रहने की अपनी शर्मिन्दगी को बचा रहा था। पर, सब यह जान रहे थे। और भैरा के बचाव में उसके साथ थे। लेकिन, कूना शरारत करने से चूकी नहीं। उसकी शरारत बहुत छोटी थी। उसने कहा कुछ नहीं। वह भैरा की तरफ देखकर हँसी थी। पर उसे अपनी हँसी भैरा को क्यों दिखानी थी? भैरा उदास हो गया। कूना ने भैरा को उदास देखा तो उसे अच्छा नहीं लगा। वह भैरा के पास गई। और भैरा के कँधे पर केवल अपना हाथ रख दिया।

सब झोंपड़ी के अन्दर थे। यह किस तरह की झोंपड़ी थी, समझ में नहीं आ रहा था। इसे कहीं से भी बनाया नहीं गया था। देखकर लगता था कि झोंपड़ी के ऊपर बादलों का छप्पर डाल दिया गया हो। असल में छत की जगह एक जमी हुई पारदर्शिता थी। पानी गिरता तो अन्दर पानी नहीं आता। यह जमी पारदर्शिता, पत्थर की पारदर्शिता भी हो सकती थी। हो सकता है छत पारदर्शी पत्थर की बनी हो। थोड़ी देर में पक्षी उड़ते दिखाई दिए। इस पारदर्शी छत से दूर की चीज़ पास दिखाई देती थी और बड़ी भी। हो सकता है कि छत आतशी शीशे की तरह पत्थर की बनी हो! रात में चन्द्रमा एकदम पास दिखता। उसके अन्दर की छाया दिखती। जैसे दूरबीन से देख रहे हों। शनि के वलय दिखाई देते। खुले आसमान में इतना उजाला दिखता कि छोटे-छोटे अक्षर पढ़े जा सकते। छप्पर में इतने तारे दिखाई दे रहे थे जैसे नए तारे उतर आए हैं।

सब लोग पीछे की तरफ गए। पीछे का दरवाज़ा गुफा के मुख की तरह था। और पीछे पत्थरों, चट्टानों का अम्बार लगा हुआ था। जैसे किसी पहाड़ की बदली कर उसे यहाँ ला दिया गया है। उन्हीं के बीच बैठा हुआ एक व्यक्ति खुद पत्थर का लग रहा था। वह पत्थर पर काम कर रहा था। उसके बाल, भौं, मूँछें सब तराशे हुए पत्थर के लग रहे थे। या हो सकता है पत्थरों के तराशने की धूल उस पर पक्की जम गई हो!

काँवरवाले सयाने से उन्होंने कहा, "आओ बबुआ! आओ। वज़नी पत्थर मिला? कितना छोटा है?"

"आज के दिन केवल दो वज़नी पत्थर मिले।" सयाने बाबा ने कहा।

"दिखाओ?"

"बोलू! मुट्ठी खोलकर दिखा दो।"

पत्थर हाथ में लेकर उन्होंने देखा।

"समय पर मिल गया। देर होती तो काम रुक जाता। तुम्हारी सहायता क्या इस बालक ने की है?"

"हाँ भैया।" उसने कहा।

"बोलू! तुम अच्छे लड़के हो। मैं तो पत्थर आदमी हूँ। धूल बनकर नष्ट हो जाऊँगा। मेरे हृदय की आवाज़, मेरे काम की छैनी-हथौड़ी से तराशने की आवाज़ है।"

पानी गिरने लगा था। बादल लगता है फट गया था। मूसलाधार बारिश होने लगी थी। बिजली के कड़कने की आवाज़ आ रही थी। जैसे झोंपड़ी के सामने बिजलियाँ गिर रही हों।

"आओ देखें।"

और वे पिछवाड़े की तरफ बढ़ गए। लम्बा-चौड़ा पिछवाड़ा भी आसमान से ढँका था। आसमान से पानी गिर रहा था। पर नीचे एक बूँद भी नहीं टपक रही थी। बाहर पानी की मोटी धार इधर-उधर गिर रही थी। बाहर बहुत-से पत्थरों के बीच झरने फूट पड़े थे। पानी की धार के बीच कड़कती बिजलियाँ थीं। कड़कती बिजलियों के साथ अचानक गिरता हुआ पानी दिखता कि कितनी ज़ोर से पानी गिर रहा है। बोलू के साथियों ने कान बन्द कर लिए थे। पर बोलू ने नहीं। उसके दोनों हाथों में पत्थर थे।

"उम्र से मैं पूरी तरह पथरा गया हूँ। पर चलता-फिरता बहुत काम करता हूँ।" उन्होंने कहा।

उन्होंने कहा, “आनेवाले पत्थर एक-एक कर छोटे होते जाएँगे और क्रमश: वज़नी भी।”

बोलू ने कहा, “पत्थरवाले बाबा, हाथ के पत्थरों को कहाँ रखूँ। मेरा हाथ दुखने लगा।”

“आओ! मैं जगह बताता हूँ।”

अन्दर चट्टानों के बीच छोटे-छोटे खाली जगहों के आले बने हुए थे। ये स्वाभाविक आले थे। बोलू की पहुँच में एक आला था। जो बोलू के लाए हुए पत्थर के बराबर भी था। पत्थरवाले बाबा ने उसी आले की तरफ इशारा किया। बोलू ने एड़ी उठाकर पत्थर को आले में रख दिया। जगह-जगह बहुत-से आले थे। उनमें पत्थर रखे थे। बोलू ने जो पत्थर रखा था वह उन सबसे भारी और छोटा था। आला बस इतना ही बड़ा था कि एक ही पत्थर आता।

सभी बच्चे आश्चर्यचकित थे। उन्हें लग रहा था कि वे खुले में बैठे हैं। उनके चारों तरफ पानी गिर रहा है और उन पर नहीं। यद्यपि वे अन्दर थे पर अपने को बाहर भी समझ रहे थे और उन्हें लग रहा था कि वे आकाश के अधिक समीप हैं।

हो सकता है कि पहले पहाड़ अन्तरिक्ष तक ऊँचे हों। और पहाड़ पर चढ़कर अन्तरिक्ष पहुँच जाते हों। यह भी हो सकता है कि पृथ्वी के ऊपर जो भी थोड़ी-सी ऊँचाई हो वह अन्तरिक्ष की ऊँचाई हो। अन्तरिक्ष तक जाने के लिए कितने ऊँचे तक जाना होगा? उन सबके मन में पत्थर के आदमी की इस बात - उनका हृदय धड़कता है जैसे छैनी-हथौड़ी की आवाज़ हो - पर बात करने की चाह थी। पर सब चुप थे। पर बोलू को उनके कहे पर विश्वास नहीं था। बोलू जब उनके पास से निकल रहा था तो उनकी धोती बोलू को छुआ गई थी। चारों तरफ पत्थर के झरोखे थे और उन झरोखों से प्रकाश और हवा आ रही थी। धोती बोलू को पत्थर की तरह ठण्डी लगी थी। उसका कड़ापन पत्थर का था। हो सकता है कि धोती में कलफ किया गया हो! धोती सूत की हो! और अधिक कलफ हो। यह कलफ पत्थर का भी हो सकता था। धोती को बहुत अच्छे से पहना गया था। धोती कमर में खुँसी हुई थी। तो क्या यह पत्थर की धोती परतदार चट्टान की चादर की तरह के कपड़े से बनाई गई थी? उनका पहनावा शायद पत्थर से तराशा गया था। इसी तरह का सलूका था।

बोलू ने कूना से कुछ कहा। तो कूना ने पत्थरवाले बाबा से पूछा, “क्या आप सचमुच पत्थर के हैं?”

“हाँ।” हँसते हुए उन्होंने कहा। जैसे मज़ाक कर रहे हों।

संगमरमर की तरह उनके सफेद दाँत हँसते समय चमक रहे थे।

कूना ने फिर पूछा, “क्या आपको मच्छर काटते हैं?”

वे मुस्कराए। कहा, “हाँ, काटते हैं।”

“मच्छर आपका खून कैसे पी सकते हैं?” आश्चर्य में कूना ने कुछ ज़ोर-से पूछा था। सभी चकित थे।

उन्होंने कहा, “मुझे पत्थर के मच्छर काटते हैं। मैं अब पत्थर का जीव हूँ। पत्थर से मेरा जीवन चलता है। कुछ देर के लिए यहाँ आने से कुछ नहीं होता। यहाँ रहने लगोगी तो एक दिन देखोगी कि तुम्हारे पैर की छोटी उँगली पत्थर की हो गई है।”

कूना ने फिर पूछा, “क्या आपके नाखून बढ़ते हैं?”

उन्होंने कहा, “हाँ।”

“क्या आपके बाल कटते हैं?” बोलू ने पूछा।

उन्होंने कहा, “हाँ।”

भैरा ने पूछा, “क्या आप नहाते हैं?”

उन्होंने कहा, “हाँ।”

“क्या आप कपड़ा धोते हैं?” कूना ने तपाक से पूछा।

उन्होंने कहा, “हाँ।”

बाल कटवाते हैं?”

“हाँ” उन्होंने कहा।

“दाल-भात सब्ज़ी खाते हैं?”

“हाँ। और पत्थर के साथ हरी सब्ज़ी भी खा सकता हूँ।”

“क्या आप जीवित मनुष्य हैं?”

“हाँ, मैं जीवित मनुष्य हूँ।”

उन्होंने गम्भीर होकर कहा, “मुझे लगता है एक दिन पत्थर भी नहीं बचेगा। मैं चाहता हूँ पत्थर का बीज

सुरक्षित रहे। मैं पत्थर का बीज ढूँढ रहा हूँ। पत्थर को बो कर पत्थर की खेती करूँगा। मैं धूल से पत्थर की सिंचाई करूँगा। पत्थर के बीज से पत्थर उगेंगे। हो सकता है कि पत्थर को एक दिन खाने के योग्य बनाया जा सके। मैं अभी पत्थर के गमले में पत्थर उगा रहा हूँ।"

बात करते-करते वे अँधेरे की तरफ बढ़ते तो उस अँधेरे के ऊपर की छत से एक तारा निकला हुआ दिखाई देता। जिससे उस तारे का उजाला नीचे आ जाता। वे जानबूझकर अँधेरे की ओर बढ़ रहे थे और देख रहे थे कि कहाँ का तारा निकल रहा है। देखू वहाँ पहुँच गया था। जैसे ही वह पहुँचा ठीक उसके ऊपर मंगल निकल आया। बोलू के साथ सप्तऋषि तारों की छाया थी। वह पहले से दिख रहे उजले ध्रुव की तरफ जा रहा था। और भैरा ने जहाँ पैर रखा था ठीक उसके ऊपर शनि के वलय थे। डरकर भैरा पीछे हट गया। यह देख कूना को फिर हँसी आई।

"बहुत रात हो गई। अब हम लोग कैसे जाएँगे?" कूना ने कहा।

"चिन्ता मत करो। अन्दर का समय मेरे काम से बीतता है। दिन-रात का पता नहीं चलता। देखो, उस तरफ भोर का तारा भी दिख रहा है। बाहर के समय से मैंने अपने पत्थर की घड़ी नहीं मिलाई। बाहर जाओगे तो मालूम होगा कि संध्या के शायद छह बज रहे हों। अरे! तुमने मेरे आँगन का तुलसीचौरा नहीं देखा। पानी तो कब का बन्द हो गया है। दीए का समय भी हो गया है," पत्थरवाले बाबा ने कहा।

उनके आँगन का जो बाहर था वहाँ बाहर का आकाश था। वहाँ केवल एक तारा दीए की लौ की तरह जल रहा था। अँधेरा अभी नहीं था। सांध्य उजाला था।

चित्र: हबीब अली

संध्या के छह-साढ़े छह बजे थे। वे घर लौट रहे थे।

लौटते समय बोलू ने कहा, "कूना, जब तुमने उनसे पूछा था कि आपके नाखून बढ़ते हैं तो उन्होंने 'हाँ' कहा था। तुमको यह भी पूछना था कि पत्थर के नाखून कैसे काटते हैं? मैंने देखा था उनके नाखून कटे हुए थे।"

कूना ने कहा, "बोलू, तुमने भी पूछा था कि आपके बाल बढ़ते हैं तो उन्होंने 'हाँ' कहा था। यह भी पूछ लेते कि पत्थर के बाल कैसे कटते हैं? कौन काटता है?"

भैरा ने कहा, "पूछ लेते कि बाल कैंची से कटते हैं कि छैनी-हथौड़ी से।""

तराशा दिन-

पत्थर का तराशा दिन निकलता होगा

तैयार होने के लिए नहाने

पत्थर के साबुन से

झाग भी होता होगा पत्थर का तराशा

पानी तराशा बहता होगा

नहा-धोकर तराशे

काम पर निकल जाते हैं

लौटते-लौटते तराशा दिन डूबता होगा।

पत्थर का बीज-

आपस में टकराने से

पत्थर टूटते हैं

या कोई टक्कर दे।

टूटने से पहले एक बड़ी चट्टान

एक छोटा पत्थर होकर रह गई।

ऐसे छोटे पत्थर को ढूँढना है

जिसके मन का वज़न एक बड़ी चट्टान है।

उस बीज को इकट्ठा करना है।

पत्थरवाले बाबा ने कहा।

जारी...

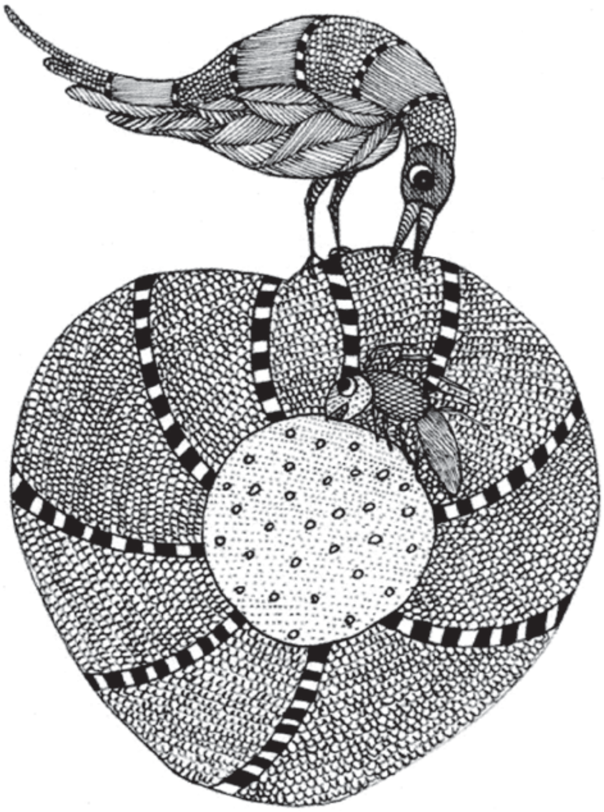

चित्रः मान्नसिंह

लड्डू के अन्दर चींटा

साइकिल पर कद्दू
कद्दू के अन्दर लड्डू
लड्डू के अन्दर चींटा
चींटा बोला, "कितना मीठा"

- सुष्मिता बैनर्जी

चकमक:0755- 4252927 9425010115 chakmak@eklavya.in

**चकमक कविता कार्ड पढ़ो
और फिर चाहो तो अपने दोस्त को
इसी कार्ड के दूसरी तरफ
एक चिट्ठी लिखकर भेज दो ।**

कविता कार्ड के चार गुच्छे। हर एक गुच्छे में। बारह कविताएँ। एक की कीमत है सिर्फ पचास रुपए। मँगाने के लिए तुम चकमक के पते पर लिख सकते हो। या हमें फोन कर सकते हो। या चाहो तो सीधे ऑनलाइन मँगा लो -http://www.pitarakart.in

इतवार की शुरुआत

वो इतवार की सुबह थी। मैं देर से उठी थी। जैसे ही मैं वॉशरूम जाने के लिए उठी मेरी होस्टल की सहेलियाँ मुझे देखकर हा, हा, हा करके हँसने लगीं। मैं थोड़ा चौंकी। “क्या शाम हो गई है?” मैंने अकिला से पूछा जो मुझे देखकर हँस रही थी। “हाँ, तुम्हें ब्रुश करने की कोई ज़रूरत नहीं है।”

“ओह, तो अच्छा होगा कि मैं थोड़ी देर और सो जाऊँ..., मैं बहुत थक गई हूँ।” ऐसा कहकर मैं वापिस बिस्तर पर आ गई। जैसे ही मैं बिस्तर पर लेटी मुझे एहसास हुआ कि अभी तो सुबह हो रही है। मुझे बहुत सारे काम करने हैं। मैं इतना आलस नहीं कर सकती। मैंने मन ही मन कहा।

जैसे ही मैं बाहर गई मेरी सहेलियाँ फिर मुझे देखकर हँसने लगीं। कुछ तो हँसते-हँसते मेरे पीछे आने लगीं।

“तुम लोग पागल हो गए हो क्या?”, मैं चिल्लाई और जल्दी से वॉशरूम में घुस गई।

“ओह माय गॉड”, मैं ज़ोरों से चिल्लाई। “लक्ष्मी, अकिला कहाँ हो तुम सब?” मैं हक्की-बक्की रह गई थी क्योंकि मेरा चेहरा काली स्याही से पुता था और बहुत ही डरावना लग रहा था। और मैं समझ गई थी कि यह किसकी हरकत है।

“मैं तुम लोगों को छोड़ूँगी नहीं” ऐसा कहकर मैं उन्हें ढूँढने निकल पड़ी। मैं गुस्से से लाल-पीली हो रही थी और आखिरकार वो दोनों मुझे कमरे में मिल ही गए।

मुझे देखते ही वो हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। “तुम दोनों, तुम्हारी बदमाशी... ” सॉरी, सॉरी कहकर वो फिर हँसने लगे। जैसे ही मैंने गुस्से का नाटक करते हुए उन्हें पीटना शुरू किया बाकी की सहेलियाँ भी कमरे में आ गईं। थोड़ी ही देर में सब के सब दाँत दिखाकर हँसने लगे। इतवार के दिन की वो एक मज़ेदार शुरुआत थी।

–आशु खाम्ब्लाई, ग्यारहवीं, बेसेंट अरुदलाई सीनियर सैकेण्डरी स्कूल चेन्नई, तमिलनाडु

चित्र: अक्षत चौधरी, नर्सरी, आरुषि संस्था भोपाल, म. प्र.

चित्र: रिया, उड़ान लर्निंग सेंटर, कांडबरी, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश

चिड़िया रानी

सदा फुदकती, कभी न थकती,
गाती मीठी-मीठी वाणी।
कैसे खुश रहती हो इतना,
सच-सच कहना चिड़िया रानी।
ताज़ा दाना, निर्मल पानी,
शुद्ध हवा और धूप सुहानी।
यही राज़ मेरी खुशियों का,
बोली हँसकर चिड़िया रानी।
खुले जगत में जीना सीखो,
ताज़ा हो सब दाना–पानी।
इतना कहकर फुदकी ज़रा-सी,
फिर फुर्र हो गई चिड़िया रानी।

-रुद्र सताशिया, छठवीं, अदानी पब्लिक स्कूल
मुन्द्रा, कच्छ, गुजरात

एक जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। एक दिन हिरन और बन्दर वहाँ बातें करने आए। एक कछुआ वहाँ घूमने आया तो उसने उन दोनों को बातें करते देखा तो वह चिल्लाया। उसकी आवाज़ सुनकर हिरन और बन्दर छिप गए और उन दोनों की जान बच गई। उस दिन के बाद वो फिर कभी भी बातें करने नहीं आए और दोनों सोचते-सोचते ही रह गए।

-खुशी, दूसरी, अजीम प्रेमजी विद्यालय टोंक,
राजस्थान

-राहुल प्रजापत, छठवीं, राजस्थान

मेरा पन्ना

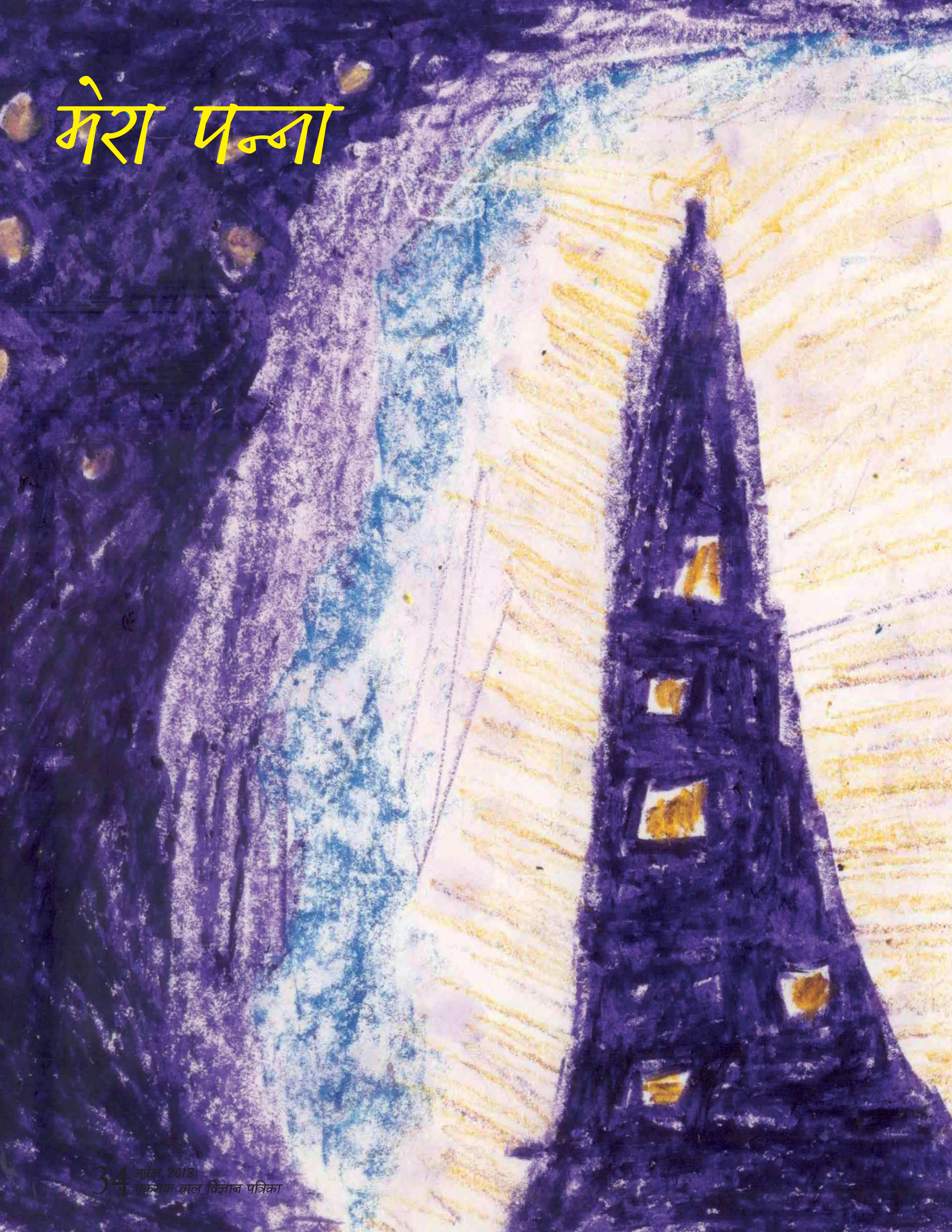

खेतों में हरियाली है
खेतों से खुशहाली है
खेतों में प्यारे-प्यारे अनाज उगते
बहुत सारे किसान खेतों में मेहनत करते
हल चलाकर बीज उगाते
सुन्दर-सुन्दर पौधे दिखते
बीज जब खेतों में उगते

-हिमांशी ध्रुव, अजीम प्रेमजी विद्यालय
धमतरी, छत्तीसगढ़

मेरा गाँव एक पाताल पर बसा हुआ है| मेरे गाँव में पहले रोड नहीं थी। और पहले के लोग झूले से उतरते-चढ़ते थे। बुज़ुर्ग लोगों के पास कई प्रकार की चमत्कारी, दुर्लभ वस्तु भी रहा करती थी और जड़ी-बूटियों का समावेश भी अधिक से अधिक था। परन्तु आजकल के दिनों में यह सब विलुप्तक होता जा रहा है। हाँ, आज हमारे देश यानी गाँव पर रोड बन गई है।

-सुमरलाल भारती, ग्यारहवीं,
तामिया आश्रमशाला

चित्र: तेजस, अक्षर नन्दसन
स्कूल पुणे, महाराष्ट्र

इन्द्रधनुष

इन्द्रधनुष है सात रंग का बैंगनी,
आसमानी, नीला, हरा और पीला,
नारंगी, लाल चटकीला देखने
में आधा गोला जैसे आधा चाँद
हमारा उस पर चढ़कर फिसलें
हरदम ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर
आधा-आधा जोड़कर बनाएँ
पूरा गोला कमर में पहनकर
नचाएँ जैसे गोल-गोल हूला

-सेंट फ्रांसिस स्कूल लखनऊ के कक्षा
2, वर्ग 'स' के बच्चों द्वारा रचित

चित्र: केदार, छह वर्ष,
गरवारे बाल भवन पुणे, महाराष्ट्र

चित्र: साध्या, दस वर्ष, पूर्णा लर्निंग सेंटर बैंगलौर, कर्नाटका

काश ऐसा हो स्कूल

एक समय ऐसा था जब मैं प्राइवेट स्कूल में पढ़ती थी। वहाँ पर बहुत पिटाई होती थी। अगर कोई बच्चा लेट आता तो हाथ ऊपर करवाए जाते थे। कभी-कभी तो दो डण्डे दाएँ हाथ पर और दो बाएँ हाथ पर पड़ते थे। मैं हमेशा सोचती थी कि काश कोई ऐसा स्कूल हो जहाँ बिलकुल पिटाई ना हो। फिर मेरे घर एक लड़की आती थी। उसने मुझे उमंग स्कूल के बारे में बताया। उसके कहने पर मैंने और मेरी बहन ने भी उमंग स्कूल में दाखिला ले लिया। जब मैं पहले दिन उमंग स्कूल आई तो हैरान रह गई क्योंकि टीचर और बच्चे गले मिल रहे थे और हाथ मिलाकर गुड मार्निंग कर रहे थे। एक दिन मुझसे कुछ गलती हो गई तो मुझे लगा कि अब तो मैं गई। अब मेरी ज़रूरी पिटाई होगी। लेकिन सर ने मुझे बुलाया और बातचीत करके समझाया। धीरे-धीरे मैंने डरना बन्द कर दिया। एक और बात है कि जब मैं आई तो उमंग में सब बच्चे एक साथ खाते-पीते और खेलते थे। पर मैं और मेरी बहन सबसे अलग खाते थे क्योंकि वहाँ पर नीची जाति के बच्चे खाते थे। इस तरह से हम सबसे अलग रहते थे। कुछ दिनों तक ऐसा चलता रहा। फिर हमारी टीचर ने समझाया कि हमारे स्कूल में सब बराबर हैं। हमें ऐसे नहीं करना चाहिए। टीचर ने भी साथ में खाना शुरू किया। फिर हममें थोड़ा-थोड़ा बदलाव आने लगा। और हम सब के साथ खाने और रहने लगे। अब हम बिना डरे अपनी बात कह सकते हैं। बात करने में झिझकते भी नहीं है। काश सभी स्कूल ऐसे ही हो जाते।

-मानसी, आसनां समूह, उमंग स्कूल हरयाणा

जवाब: गणित है मज़ेदार

1. =3

2. 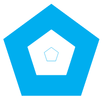 = 6, = 2, = 1 और 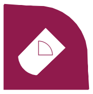 = 4

3. **हाथ मिलाने की पहेली का हल:** कमरे में मौजूद हरेक व्यक्ति खुद को छोड़कर बाकी सभी से हाथ मिलाएगा। यानी कि कमरे में जितने भी व्यक्ति होंगे हाथ मिलाने वालों की संख्या उससे एक कम होगी। इस हिसाब से जब कमरे में केवल 2 व्यक्ति हों तो 2 × 1 = 2 होगा, लेकिन एक बार में दो व्यंक्ति हाथ मिलाएँगे इसलिए कुल हाथ मिलाने की संख्या होगी (2 × 1) / 2 = 1,

इसी प्रकार जब कमरे में तीन व्यक्ति हों तो (3 × 2) / 2 = 3,

जब चार व्यक्ति हों तो (4 × 3) / 2 = 6

जब पाँच व्यक्ति हों तो (5 × 4) / 2 = 10,

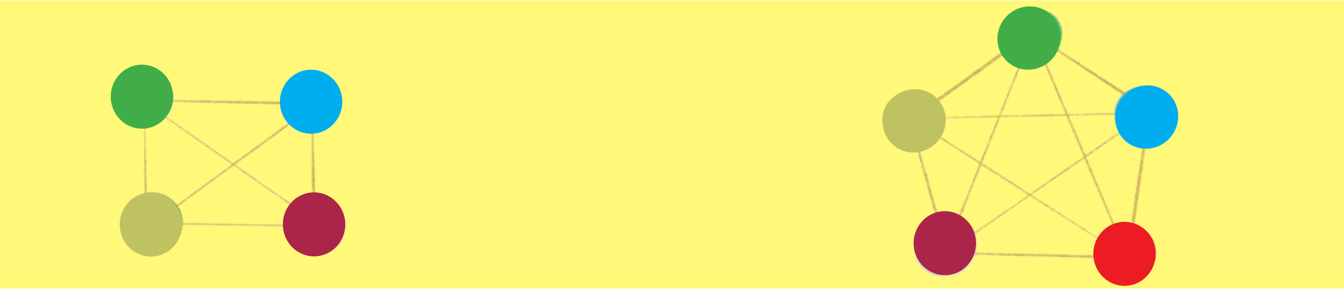

जब छह व्यक्ति हों तो (6 × 5) / 2 = 15,

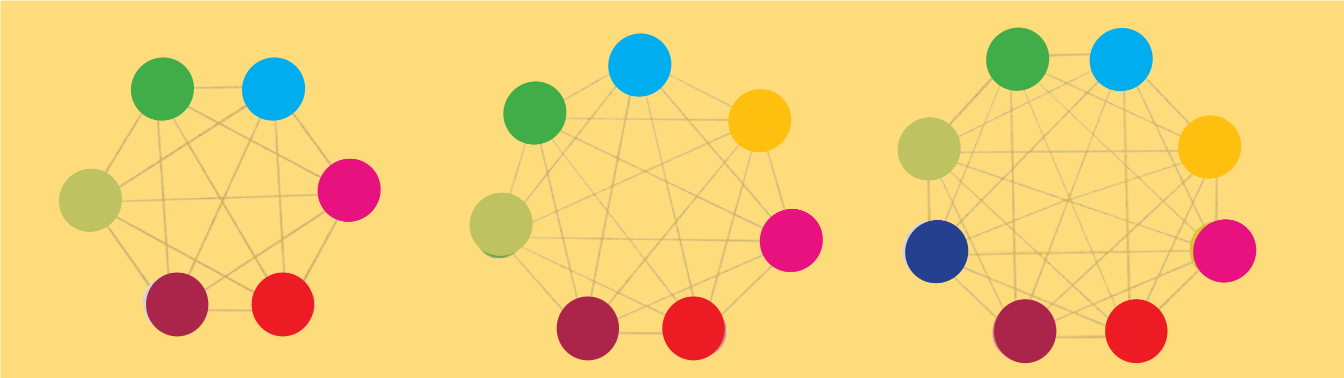

जब सात व्यक्ति हों तो (7 × 6) / 2 = 21 और इसी प्रकार आगे भी....

अब इन सभी जवाबों को एक साथ रखने पर हम देख पाएँगे कि

1, 3, 6, 10, 15, 21.....

इनके बीच के अन्तर पर ध्यान दो – ये हैं 2, 3, 4, 5, 6, यानी अगले चरण का उत्तर पाने के लिए सवाल में व्यक्तियों की जितनी संख्या दी गई है उससे एक अधिक संख्या को पिछले चरण के उत्तर में जोड़ दो।

माथापच्ची

ऐसी कौन-सी चीज़ है जिसे हम आधा खा लें तो भी वह पूरी ही रहती है?

ग़म

नीचे एक मकान का नक्शा दिया गया है जिसमें हरेक कमरे की दीवारों में मौजूद दरवाज़ों को दिखाया गया है। तुम्हें मकान के अन्दर या बाहर के किसी भी दरवाज़े से शुरुआत करके हरेक दरवाज़े से होकर एक बार गुज़रना है। कैसे करोगे?

फटाफट बताओ कि

जब हम चलते हैं तो हमारा बायाँ हाथ, बायाँ पैर बढ़ाने पर आगे की ओर हिलता है या दायाँ पैर बढ़ाने पर?

यदि एक जैसे दो कागज़ों को, एक को सीधा और एक को गोल-गोल करके समान ऊँचाई से फेंका जाए तो कौन-सा पहले ज़मीन पर पहुँचेगा?

आगे-आगे मौजी भैया, पीछे-पीछे पूँछ
आगे बढ़ते मौजी भैया, घटती जाती पूँछ
(गाधा-ईसु)

सफेद धरती काले छोले
हाथों बोएँ, मुँह से बोले
(रक्षअ खेलि रप पीकॉ)

चित्र: दिलीप चिंचालकर

सुडोकू

दिए हुए बॉक्स में 1 से 6 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 6 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराएं न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको छह डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 6 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है करके तो देखो, जवाब अगले अंक में तुमको मिल जाएगा।

सुडोकू-6

	6				
5			1		
6		2			5
			3		
		6		3	
	5				4

सुडोकू-5 का जवाब

2	4	1	3
3	1	2	4
4	2	3	1
1	3	4	2

एक सूखे पेड़ की दुनिया

दीपाली शुक्ला

मेरे घर के पीछे एक पहाड़ी है। उसमें किस्म-किस्म के पेड़ हैं। सब हरे-भरे हैं बस एक शीशम के पेड़ को छोड़कर। इस पेड़ से मुलाकात का सिलसिला दो बरस पहले शुरू हुआ। तब यह एक हरियल शीशम था। बस एक डाल कुछ सूखापन लिए सिर उठाए आसमान को छूती थी। बरसात के मौसम में मेरा ध्यान तब शीशम पर गया जब गौरेया, बुलबुल, सातभाई चिड़ियाओं के झुण्ड इसकी सबसे ऊँची शाख पर अपने भीगे पंखों को सुखाने बैठे थे और उनकी पंखों की फड़फड़ाहट से बारिश हो रही थी। उसके बाद मैं रोज़ ही कुछ समय इस पेड़ को ताकते हुए बिताने लगी। सूखने का सिलसिला धीरे-धीरे पंछियों के कलरव के बीच बढ़ रहा था। पर हर सुबह तरह-तरह की चिड़ियाएँ शीशम पर फुदकतीं, उछलतीं, झगड़तीं, सुस्तातीं।

आज यह सूख गया है, भूरे खुरदरे तने और उसके चारों तरफ लटकी सूखी लताओं के अवशेषों को लिए खड़ा है। इसके पड़ोसी बेर और सेमल पर मौसम के साथ परिन्दों की बसाहट करवट लेती है पर शीशम की सूखी डालियाँ हर मौसम में एक सी रहती हैं।

कल का ही किस्सा है सात भाई चिड़ियाओं का एक पूरा का पूरा कुनबा डालों पर मोतियों की तरह खुद ही सज गया था। ठण्ड के कारण कितनी ही एक साथ सटकर नींद का मज़ा ले रही थीं। कुछ सुबह के आने के साथ अपनी चोंच को पैना कर रही थीं खुरदरे तने से रगड़कर। उनके इर्द-गिर्द बुलबुल उड़ान भर रही थी। गौरैया भी उनको आ-आकर देख रही थीं।

थोड़े ही दिन पहले भोजन की तलाश में मोरनियां और उनके नन्हे एक कतार में शीशम के पेड़ के आसपास से गुज़र रहे थे। मोरनियों को आकर्षित करने के लिए मोर आवाज़ कर रहे थे। पर इधर मोरनियों को तो जैसे कुछ सुनाई ही नहीं दे रहा था। बच्चों के साथ नरम पत्तियों को चबाने में मशगूल थीं। आकर्षित करने की कवायद में एक मोर ने आखिरकार शीशम की एक शाख का सहारा लिया। काफी देर वह डाल पर बैठा आवाज़ देता रहा, देता रहा। फिर हवा में फिसलकर बेर के झुरमुट में खो गया।

शीशम के पक्के-पक्के दोस्तों में शामिल है कोयल। इनकी दोस्ती काफी पुरानी है। जब पेड़ पत्तियों से लदा-फदा था तब भी और आज जब वह सूखा दरख्त है तब भी कोयल बतियाती दिखती हैं इससे। सुबह-सुबह ढेर सारी कोयल पेड़ पर आ बैठती हैं। जो एक-दूसरे से बात नहीं करतीं वो मुँह फेरकर बैठती हैं। शीशम की डालों पर बार-बार पंखों को फड़फड़ाकर हवा करती हैं। चोंच को रगड़ती हैं। कई बार मादा कोयल शीशम पर घण्टों बैठती है। कितनी बातें कहती सुनती है शीशम से, किसे पता!

हमेशा नहीं पर कभी-कभार शिकरा भी शीशम पर आराम फरमाता दिखता है। उस दिन चारों ओर बस मौन होता है। बाकी परिन्दे आसपास नहीं होते। तब हवा का बहाव भी बेहद सहमा होता है। शिकरा पेड़ के रंग को यूँ लपेटता है कि दोनों को अलग करना आसान नहीं।

जब शीशम हरियल था तब पतरंगी भी अक्सर शीशम से हरितिमा लेने आती थी। दोपहर की तेज धूप में पत्तियों के बीच पतरंगी की चमक का क्या कहना! बीच-बीच में पतरंगी शीशम को अपनी उड़ान भी दिखाती। पर अब पतरंगी इस दरख्त पर नहीं आती। शीशम के पड़ोसी पलाश की पत्तियों से झांकती है इन दिनों।

एक और दोस्त है जिसे किसी से बात करने की फुर्सत ही नहीं मिलती सिवाय शीशम के। वह ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, एक शाख से दूसरी पर दौड़ती रहती है शीशम को अपनी झबरी पूँछ से गुदगुदी करती। कुनकुनी धूप का आनंद लेने के लिए वह तने पर आँखें मूँदें रहती है। किसी-किसी दिन तो बस गिलहरियों का एक के पीछे एक दौड़ने का सिलसिला थमता ही नहीं। तब शीशम को एक नया रंग मिलता है।

फोटोग्राफ: दीपाली शुक्ला

पहली बार श्रमिकों के लिये ऐतिहासिक योजनाएं

योजनाओं के लाभ के लिये श्रमिकों का पंजीयन 1 अप्रैल से

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

- गर्भवती श्रमिक महिलाओं को पोषण आहार के लिये 4 हजार रुपये। प्रसव होने पर महिला के खाते में 12 हजार 500 रुपये जमा किये जायेंगे।
- घर के मुखिया श्रमिक की सामान्य मृत्यु पर परिवार को दो लाख तथा दुर्घटना में मृत्यु पर 4 लाख रुपये की सहायता।
- श्रमिक को मृत्यु पर अंतिम संस्कार के लिये पंचायत/नगरीय निकाय से 5 हजार रुपये की नगद सहायता।
- गंभीर बीमारी से ग्रस्त श्रमिकों के लिए प्रतिष्ठित निजी अस्पतालों में इलाज की व्यवस्था। जरूरी होने पर बड़े शहरों में भी इलाज का इंतजाम।
- हर श्रमिक को मकान। तीन साल के अंदर यह काम पूरा होगा। शहरों में श्रमिकों को पक्के मकान। गांवों में श्रमिक परिवारों को भूमि के पट्टे और पक्का मकान बनाने के लिये राशि।
- श्रमिकों के बच्चों को बेहतर शिक्षा के लिये भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और जबलपुर में पब्लिक स्कूल की तर्ज पर श्रमोदय विद्यालय।
- श्रमिकों के बच्चों की पहली कक्षा से लेकर डाक्टरेट तक पूरी पढ़ाई की फीस सरकार भरेगी। इसमें इंजीनियरिंग, मेडीकल तथा नामचीन प्रबंधन संस्थान भी शामिल होंगे।
- प्रतिष्ठित सेवाओं की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिये असंगठित श्रमिकों के प्रतिभावान बच्चों को बेहतरीन संस्थानों में नि:शुल्क कोचिंग।
- स्वयं का रोजगार स्थापित करने वाले श्रमिकों को एक वर्ष का प्रशिक्षण और बैंक ऋण। ऋण पर सब्सिडी और ऋण की गारंटी सरकार द्वारा।
- हर साल एक लाख श्रमिकों को स्वरोज़गार के लिए ऋण।
- श्रमिकों को स्वरोज़गार के लिये प्रशिक्षण, ऋण पर सब्सिडी। ऋण की गारंटी सरकार लेगी।
- छोटे-मोटे कामधंधों में लगे श्रमिकों के लिए लघु अवधि प्रशिक्षण केन्द्र। इनमें अकुशल श्रमिक बनाये जायेंगे कुशल।
- साइकिल-रिक्शा चलाने वालों को ई-रिक्शा और हाथठेला चलाने वाले को ई-लोडर का मालिक बनाने की पहल। 5 प्रतिशत ब्याज अनुदान के साथ 30 हजार की सब्सिडी दी जायेगी।
- शहरों में छोटे-मोटे काम करने वालों को साइकिल के लिये चार हजार रुपये की सहायता।
- असंगठित श्रमिक परिवारों को बिजली कनेक्शन। उनसे 200 रुपये मासिक फ्लैट रेट पर बिजली।
- तेंदूपत्ता तोड़ने, महुआ के फूल एवं चिरौंजी बीनने वाली श्रमिक बहनों को चरण पादुका योजना के तहत जूते-चप्पल और प्यास बुझाने के लिये ठण्डें पानी की कुप्पी।

"आर्थिक असुरक्षा से जूझते असंगठित श्रमिक बहनो, भाइयो की बेहतरी के लिए हम संकल्पित हैं। उन्हें आर्थिक विकास के साथ ही सामाजिक बेहतरी, उनके बच्चों को बेहतर शिक्षा तथा अन्य सुविधाएं देने के लिए योजनाओं पर प्रभावी अमल किया जा रहा है।"

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

शासकीय योजनाओं का लाभ लेने के लिये पंजीयन अवश्य करायें। पोर्टल shramsewa.mp.gov.in पर पंजीयन करवाएं।

असंगठित श्रमिक कौन ?

कृषि मजदूर, घरों में काम करने वाले, फेरी लगाने वाले दुग्ध श्रमिक, मछली पालन श्रमिक, पत्थर तोड़ने वाले, पक्की ईंट बनाने वाले, बाजारों में दुकानों पर काम करने वाले, गोदामों में काम करने वाले, परिवहन, हाथकरघा, पावरलूम, रंगाई-छपाई, सिलाई, अगरबत्ती बनाने वाले, चमड़े की वस्तुएँ और जूते बनाने वाले, ऑटो-रिक्शा चालक, आटा, तेल, दाल तथा चावल मिलों में काम करने वाले, लकड़ी का काम करने वाले, बर्तन बनाने वाले, कारीगर, लुहार, बढ़ई तथा माचिस एवं आतिशबाजी उद्योग में लगे श्रमिक।

श्रमिक जो असंगठित, सुरक्षित उनके भी हित

/CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2018

D-83134 14/03/2018

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ ▶
ऊपर से नीचे ▼

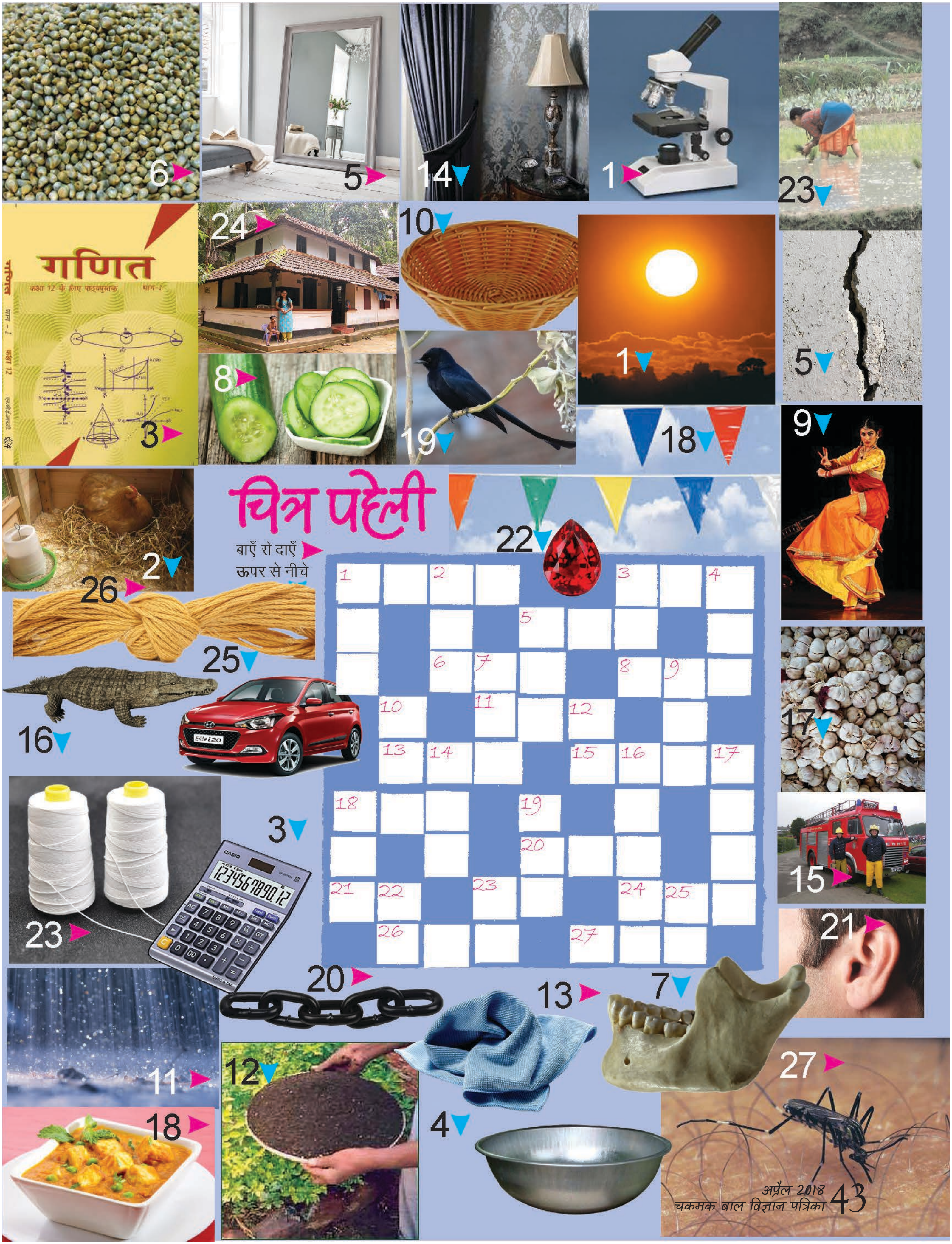

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20

चित्र: नीलेश गहलोत

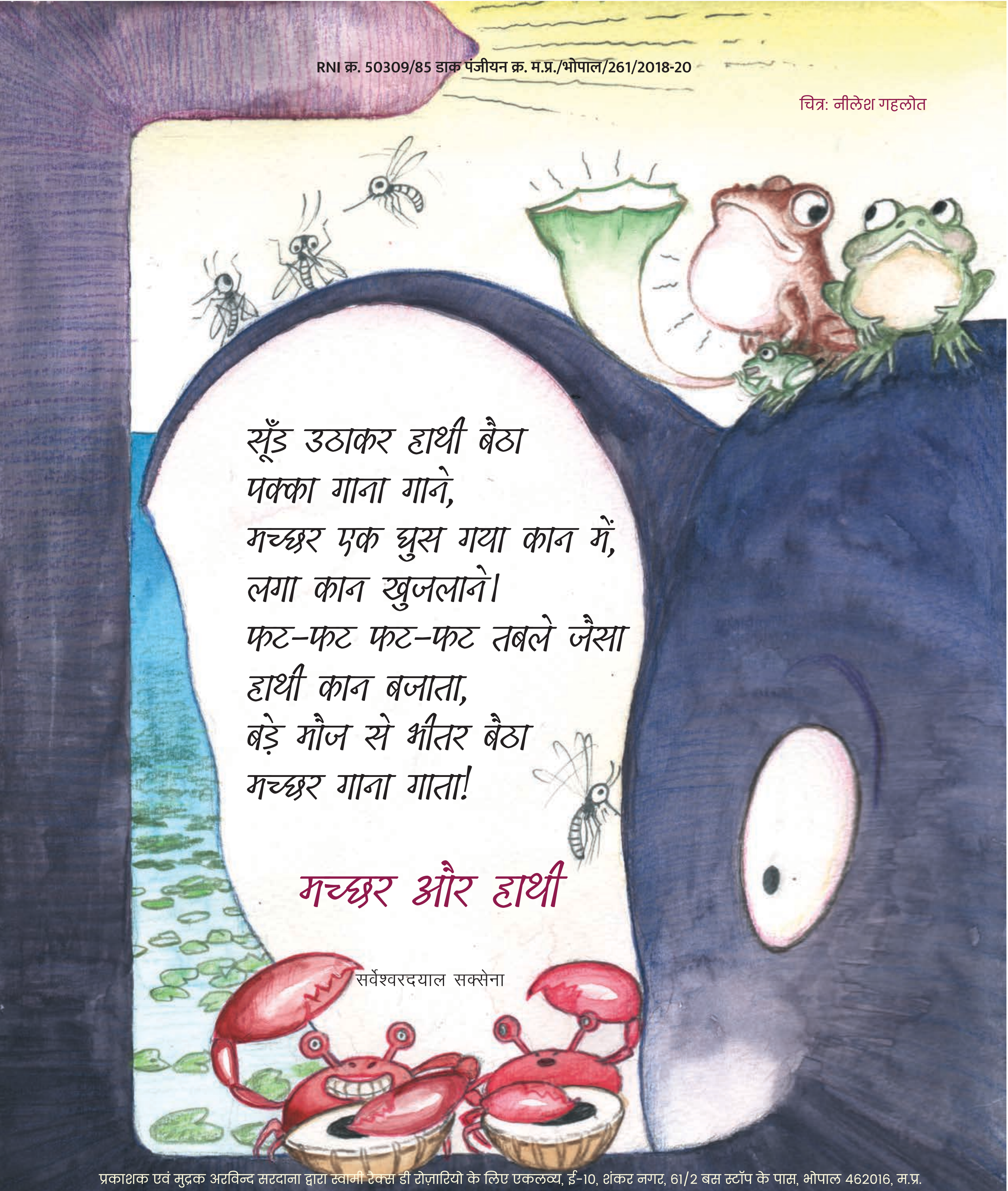

मच्छर और हाथी

सूँड़ उठाकर हाथी बैठा
पक्का गाना गाने,
मच्छर एक घुस गया कान में,
लगा कान खुजलाने।
फट-फट फट-फट तबले जैसा
हाथी कान बजाता,
बड़े मौज से भीतर बैठा
मच्छर गाना गाता!

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र.
से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: सुशील शुक्ल